ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

अप्रैल 2017

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

7 दिवसीय ध्यान योग शिविर एवं अथर्ववेद बृहद् यज्ञ सम्पन्न

दीप प्रज्ज्वलित कर शिविर का उद्घाटन करते हुए श्री करमवीर जी राठी, पूर्व चेयरमैन निगम पार्षद् बहादुरगढ़, श्री कन्हैया लाल जी आर्य, उपप्रधान आश्रम ट्रस्टी, श्री सत्यपाल जी वत्स आर्य, उपमन्त्री आश्रम ट्रस्टी, श्री सत्यानन्द जी आर्य, प्रधान ट्रस्टी आश्रम, श्री लाला चतुर्भुज जी बंसल।

आचार्य श्री चारूदत्त जी मोरिसिस को स्मृति चिन्ह व पट्टा देकर सम्मानित करते हुए दायें से श्री राजवीर जी आर्य, श्री स्वामी धर्ममुनि जी, श्री सत्यपाल वत्स आर्य, आचार्य चांद सिंह जी, श्री स्वामी रामानन्द जी सरस्वती एवम् श्री कन्हैया लाल जी आर्य।

समापन्न समारोह विवरण पुष्ठ 4 पर देखें

आर्य समाज के
संस्थापक,
वेदों के उद्धारक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम
संस्थापक कर्मयोगी
पूज्य श्री आत्मस्वामी
जी महाराज

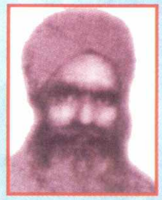

आगामी आयोजित योगशिविर एवं यज्ञोत्सव कार्यक्रम

(1) **त्रिदिवसीय यज्ञ शिविर** स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक रोजड़ की अध्यक्षता में 30 जून शुक्रवार से 2 जुलाई रविवार तक। इस शिविर में शंका समाधान का मुख्य कार्यक्रम रहेगा।

(2) **आश्रम का स्वर्णजयन्ति महोत्सव** आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी चितेश्वरानन्द जी सरस्वती योग-यज्ञ विशेषज्ञ की अध्यक्षता में योग साधना एवं चतुर्वेद ब्रह्म पारायण बृहद्यज्ञ 1 सितम्बर शुक्रवार से आरम्भ होने पर 2 अक्टूबर सोमवार 51 कुण्डों में यज्ञपूर्णाहुति। इस शुभावसर पर विविध सम्मेलनों का आयोजन किया जाएगा और भव्य स्मारिका का प्रकाशन होगा। आप सभी से निवेदन है कि स्मारिका में प्रकाशनार्थ अपने लेख और अपनी फर्म के विज्ञापन प्रकाशनार्थ भेजकर स्मारिका की शोभा बढ़ाएं और कार्यकर्त्ताओं को उत्साहित करें।

(3) पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी महाराज मुख्यधिष्ठाता के 82वें जन्मदिवस पर **बृहद्, यज्ञ एवं निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर** का आयोजन 20 नवम्बर सोमवार को विशाल स्तर पर किया जाएगा।

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

942
श्री सत्यपाल जी आर्य
Director
(Communication & Mgt)
राम विहार, गौशाला रोड,
महिन्द्रगढ़, हरियाणा

943
श्री सुरेश कुमार जी जांगड़ा
बहादुरगढ़

944 श्री ऋषि प्रकाश जी दहिया, सैक्टर-6, बहादुरगढ़, झज्जर, हरियाणा

प्रिय बन्धुओं! मास अप्रैल में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी मई अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

- व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म–शुद्धि–पथ (मासिक)

चैत्र-वैशाख सम्वत् 2073 अप्रैल 2017

सृष्टि सं. 1972949117 दयानन्दाब्द 193

वर्ष–16) संस्थापक–स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक–4

(वर्ष 47 अंक 4).

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195, 9728236507

❖

सह सम्पादकः

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(08053403508)

❖

उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर .

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला–झज्जर (हरियाणा) पिन–124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
समाचार	4
ब्रह्मणस्पति का परामर्श	5
हम राष्ट्र के प्रति प्रेम करें	6
आदर्श कर्मठता	7
उपासक उपास्य संबंध	8
वेदज्ञान से ही जीवन का कल्याण	10
जीवन	11
शिष्टाचार	12
माता-पिता की स्थिति	13
इंसान की प्रथम गुरु होती है मां	14
सब्जियों के छिलकों में छुपे हैं कई सारे गुण	16
स्वस्थ और लम्बी आयु पाने के लिए करें भरपूर तैयारी	17
एक आदर्श	18
हंसो और हंसाओ	19
मन-कमजोरी अंधविश्वास पाखंड की जननी	20
नवीन संवत्सर मंगलमय हो	21
हमारी महान विभूति-पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी	23
अमृतसर की खूनी बैसाखी से क्षुब्ध हुए अमर शहीदों...	25
शहीदे आजम पण्डित श्री लेखराम जी आर्य मुसाफिर...	28
आपको रखे तरोताजा नींबू	32
रामनवमी को हम कैसे मनाए?	33
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

7 दिवसीय नि:शुल्क ध्यान योग शिविर एवं अथर्ववेद बृहद यज्ञ समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति 2017 का प्रथम आयोजन 27 मार्च सोमवार से रविवार तक स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य में अथर्ववेदीये बृहद् यज्ञ एवं योग साधना शिविर उत्साह व हर्ष के साथ सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर अनेकों संन्यासी विद्वान् वक्ता भजनोपदेशक एवं दानी व सामाजिक कार्यकर्त्ता पधारे। शिविर उद्घाटन 27 मार्च 2017 को सायं 4 बजे श्री कर्मवीर जी राठी, पूर्व चेयरमैन, बहादुरगढ़, जिला अध्यक्ष इ.ने.लो. द्वारा किया गया।। ध्यान योग साधना शिविर 28 मार्च से प्रात: 5 बजे से 7 बजे तक ब्रह्मनिष्ठ आचार्य सत्यवीर जी रोहिणी दिल्ली द्वारा योग साधना का अभ्यास कराया गया एवं आसनों का प्रशिक्षण दिया गया। आसनों के प्रशिक्षण में श्री सत्यपाल जी वत्सार्य एवं आचार्य चांद सिंह जी का सहयोग प्राप्त हुआ। अथर्ववेद बृहद यज्ञ 27 मार्च से सायं काल से प्रारम्भ हुआ। प्रतिदिन प्रात: 7.30 बजे से 10 बजे तक सायं काल 4 बजे से 7 बजे तक यज्ञ भजन उपदेश चलता रहा।

वेदपाठी ब्र. बृजमोहन, ब्र. विपिन एवं ब्र मोहन फर्रूखनगर आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया। मध्य-मध्य में भिन्न-भिन्न विद्वानों के प्रवचन होते रहे। श्री सत्यवीर जी शास्त्री, स्वामी रामानन्द जी, आचार्य चारू दत्त जी मोरिसस, आचार्य चांद सिंह जी, आचार्य रवि शास्त्री जी, आचार्य देवेन्द्र जी धनौरा टीकरी, आचार्य खुशीराम जी, आचार्य जितेन्द्र जी पुरुषार्थी, श्री सत्यपाल वत्स आर्य, तबलावादक श्री रामानन्द जी विहार, आर्य भजनोपदेशक, श्री ब्रह्मपाल तिलकराज मण्डली, ब्रह्मचारियों के भजन, श्री सत्यानन्द जी आर्य, श्री रामदेव जी आर्य, श्रीमती सुनिता जी आर्य हापुड़, श्री राधेश्याम जी आर्य, ब्र. ओम् प्रकाश, श्री सुखपाल जी, श्रीमती चन्द्रवती गुड़गांव, श्री लक्ष्मण प्रसाद जी नरेला, श्री भगवान दास, संगीताचार्य, श्री पं. जय भगवान जी, श्री रमेश चन्द्र जी, वैदिक कन्या गुरुकुल की छात्राओं का भजनों का कार्यक्रम प्रभावशाली रहा। इस अवसर पर श्री राजेन्द्र जी सहरावत सह पत्निक श्री कन्हैया लाल जी आर्य, श्रीमती चन्द्रवती आर्या, गुरुग्राम श्रीमती वेद कौर आर्या बादली, श्रीमती भारती सिसोदिया दिल्ली, वानप्रस्थी मनदेव आश्रम, श्री मुकेश जी खरबंदा, श्रीमती सरला खरबंदा, पं मांगे राम जी मुरथल हरियाणा, वानप्रस्थी दर्शनमुनि जी, श्री दयानन्द जी आर्य, चौधरी चन्द्रभान जी परिवार, विकासपुरी दिल्ली, श्री राम देव जी आर्य, श्री बृजलाल जी सहगल, श्री रविन्द्र जी आर्य सहपत्निक, सैक्टर-6, बहादुरगढ़, श्री प्रवीण जी सिंघल, सपत्नीक मॉडल टाऊन, बहादुरगढ़ आदि यजमानों द्वारा यज्ञमान आसनों को शोभित किया गया। श्री राजवीर जी आर्य द्वारा कुशलतापूर्वक मंच संचालन किया गया।

सभी उपस्थित श्रोताओं ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। व्यवस्था के लिए आचार्य विक्रम देव जी, करण जी व जगमेन्द्र जी आदि सभी विद्यार्थियों का सहयोग रहा। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सत्यवीर जी ने बहुत प्रशंसा की तथा सभी कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद किया। स्वामी धर्ममुनि जी के आशीर्वाद व ऋषिलंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

श्री वेदपाल जी आर्य दिवंगत

आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य श्री वेदपाल जी आर्य दहकोरा वाले, वर्तमान महावीर पार्क बहादुरगढ़ का हृदयगति रूक जाने से 64 वर्ष की अल्प आयु में निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार 28 मार्च को बहादुरगढ़ रामबाग शमशान घाट में किया गया और प्रेरणा श्रद्धांजलि सभा के अवसर पर यज्ञ कार्यक्रम श्री विक्रमदेव जी शास्त्री द्वारा महावीर पार्क बहादुरगढ़ में स्वर्गीय वेदपाल जी के गृह पर 3 अप्रैल को उनके सुपुत्र योगेश जी से सम्पन्न करवाया गया। अनेकों रिश्तेदारों, सम्बन्धियों ने पहुंचकर श्रद्धांजलि सभा में श्रद्धासुमन अर्पित किए। पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा श्री वेदपाल जी के कर्मठ जीवन पर प्रकाश डालते हुए परिवार को सान्तवना दी गई। वेदपाल जी छठी कक्षा में पढ़ते हुए ही स्वामी जी के सम्पर्क में आ गए थे। यज्ञादि धार्मिक भावनाओं के परोपकार प्रिय थे, इस आयु में भी मोरचाल आसनादि पार्क में अन्यों को परशिक्षण देते थे। आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं फर्रूखनगर, दोनों आश्रमों के समस्त ट्रस्ट अधिकारी सदस्य एवं कार्यकर्त्ता आत्मशुद्धि पथ का एक संरक्षक सदस्य कम होने से परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं शोक संतप्त परिजनों को इस दारूण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

- व्यवस्थापक आश्रम

ब्रह्मणस्पति का परामर्श

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

प्रनूनं ब्रह्मणस्पतिर्, मन्त्रं वदत्युक्थ्यम्।
यस्मिन्निन्द्रो वरूणो मित्रो अर्यमा,
देवा ओकांसि चक्रिरे॥

ऋ 1.40.5

ऋषि:**कण्व:घौर:**। देवता **ब्रह्मणस्पति:**। छन्द: **बृहती।**

(ब्रह्मणस्पति:) वेदज्ञान का अधिपति परमेश्वर तथा विद्वान् मनुष्य **(नूनं)** निश्चय ही [ऐसे] **(उक्थ्यम्)** प्रशंसनीय **(मन्त्रं)** परामर्श को **(प्र वदति)** प्रकृष्ट रूप से कहता है, **(यस्मिन्)** जिसमें **(इन्द्र:)** इन्द्र, **(वरूण:)** वरूण, **(मित्र:)** मित्र [और] **(अर्यमा)** अर्यमा **(देवा:)** देव **(ओकांसि)** घर **(चक्रिरे)** किये होते हैं।

हे मनुष्य! जब कभी तुझे किसी विषय में परामर्श की आवश्यकता होती है, तब इधर-उधर मारा-मारा क्यों फिरता है? वे लोग जो स्वयं अज्ञानी और अपूर्ण है, भला तुझे क्या परामर्श देंगे? उनकी सलाह पाकर तो तू पथ-भ्रष्ट ही होगा। अत: जब कभी तेरे मन में कर्तव्याकर्तव्य का संशय उपस्थित हो, तब वेदज्ञान के अधिपति ब्रह्मणस्पति प्रभु की शरण में जा। अन्तर्मुख होकर सच्चे हृदय से अपनी समस्या उनके सम्मुख रख। वे अवश्य ही तेरे मन में ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करेंगे और तेरे संशय या भ्रान्ति की सब काली घटाओं को छिन्न-भिन्न कर देंगे। अन्धकार में ज्योति पाने के लिए तू ब्रह्मणस्पति प्रभु के दिये हुए वेदों को भी देख सकता है कि उनमें क्या लिखा है, क्योंकि उनमें दिये हुए परामर्श भी ब्रह्मणस्पति के ही परामर्श हैं। इसके अतिरिक्त वेदों के ज्ञानी, अनुभवी, सदाचारी, मित्रभाव रखनेवाले विद्वज्जन भी 'ब्रह्मणस्पति' है। यदि परमात्मा की प्रेरणा सुन सकने का सामर्थ्य तुझमें नहीं, तो तू उन विद्वानों की ही शरण में जा। उनसे अपने संशयों का निवारण करवा।

जो 'ब्रह्मणस्पति' है, उसके 'मन्त्र' या परामर्श में इन्द्र, वरूण, मित्र और अर्यमा देवों का निवास होता है। 'इन्द्र ऐश्वर्य, उत्कर्ष, पराक्रम, विजय और सफलता को सूचित करता है। 'वरूण' पाप-निवारण का आदर्श है। 'मित्र' मैत्री और स्नेह का प्रतिनिधि है। 'अर्यमा श्रेष्ठ एवं अश्रेष्ठों के साथ यथायोग्य व्यवहार एवं न्याय का देव है। ब्रह्मणस्पति के परामर्श में इन देवों के निवास का तात्पर्य है कि इन देवों से सूचित होनेवाली उक्त विशेषताएं उस परामर्श में निहित रहती हैं। उस परामर्श को पाकर और उनके अनुसार चलकर मनुष्य उत्कर्षवान् और विजयी होता है, पाप से बचता है, अन्य जनों के प्रति मैत्री और न्याय का बर्ताव करता है। आओ, हम भी संशय की वेला में 'ब्रह्मणस्पति' प्रभु और 'ब्रह्मणस्पति' विद्वान् को अपना अन्तरंग बनाएँ, उसी से पूछें, उसी से प्रेरित हों और उसी के सन्देश का पालन करें।

- वेदमञ्जरी

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है और दिव्य फार्मेशी पतंजलि उत्पादन वस्तुए भी प्राप्त हैं।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा)
पिन-124507, चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय

हम राष्ट्र के प्रति प्रेम करें

वयं राष्ट्र जागृयाम पुरोहिताः यजु. 9.23

हम राष्ट्र के पुरोहित बन कर आलस्य छोड़कर जागरूक रहें।

प्रिय पाठक बन्धुओ! उपरोक्त वेद सुक्ति हमें संदेश दे रही है कि हम राष्ट्र के पुरोहित बनकर राष्ट्र का हित करें। धैर्य रखकर हमें चिन्तन विचार करना चाहिए कि वर्तमान में राष्ट्र के प्रति नागरिकों के जो विचार चल रहे है। प्रान्तवाद, जातिवाद, भाई, भतीजावाद आदि-आदि। क्या ये विचार राष्ट्र हितकर हैं। आप सभी एक स्वर से स्वीकार करेंगे नहीं नहीं। फिर क्यों जातिवाद के झगड़े हो रहे हैं। भारतवर्ष गुलाम होने का मुख्य कारण जातिवाद रहा है। यवन आये उनके बाद अंग्रेज आये छोटे-छोटे राज्यों में भारत को बंटा हुआ देखा उन्होंने भी फूट डालो राज करो' के सिद्धान्त को बढ़ावा दिया राजपुतों-ठाकुरों पर हमला हुआ। दुसरे वर्ग बैठे-बैठे देख रहे हैं। हमें क्या जाट-पीट रहे हैं, ठाकुर मर रहे हैं। धीरे-धीरे भारत पर काबिज हो गये, सभी को गुलाम बना लिया। भारतवासियों की जो दुर्दशा हुई इतिहास के पृष्ठ खुन से रंगे पड़े हैं।

राष्ट्रवासियों सावधान हो जाओ! किसी भी राष्ट्र की प्रगति अथवा दुर्गुति के लिए वहां निवास करने वाली जनता पूर्ण रूप से उत्तरदायी होती है। कोई भी राष्ट्र तभी खुशहाल और शक्तिशाली बनता है। जब राष्ट्र के प्रति जनता के दिलों में अपने देश के प्रति प्रेम हो, क्योंकि अपने देश के प्रति प्रेम करने वाली जनता राष्ट्र हित में हर त्याग के लिए सदैव तैयार रहती है। मुझे यहां जापान के उस विद्यार्थी का स्मरण हो रहा है जिसने स्वामी रामतीर्थ को शुद्ध खाद्य पदार्थ न मिलने पर निराश हताश देखकर बहुत सारे फल प्रस्तुत कर देता है, पैसे लेने की कहने पर आंखो में अश्रुभर कहता है बस स्वामी जी इन फलों का मुल्य मुझे ये वचन दीजिए कि भारत जाकर यह मत कहना मुझे जापान में खाने को कुछ नहीं मिला। यदि जनता में राष्ट्र प्रेम की भावना जापान के छोटे से बालक की तरह रहती है तब राष्ट्र उन्नति करता है। इस भावना के अभाव में राष्ट्र कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। इसके विपरीत देश में हमेशा अशान्ति फैलती रहेगी। ऐसे राष्ट्र में सुख-सम्पन्नता की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

सुनो भाईयो! सच्चाई तो यह है कि अपने देश में कानुन व्यवस्था का पालन नहीं करने वाला व्यक्ति चाहे किसी भी पद पर हो सांसद, विधायक, मन्त्री, संत्री, उच्च अधिकारी आदि। कभी भी राष्ट्र भक्त नहीं हो सकता इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का सर्वप्रथम कर्तव्य है राष्ट्र हित में पूर्ण निष्ठा रखना और हर अवस्था में उसका पालन करना है। कोई भी व्यक्ति राष्ट्र से उपर नहीं हो सकता प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र के लिए होता है। राष्ट्र किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं होता। प्रत्येक राष्ट्रवासी को यह समझना अत्यन्त आवश्यक है कि किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी जनता से होती है। अर्थात् जनता का चरित्र राष्ट्र के चरित्र को रेखांकित करता है। जिस समाज में नफरत और वैमनस्य का बोलबाला होगा, विश्व में उस देश की छवि नकारात्मक ही होगी। आप पाकिस्तान को देख लीजिए कैसी छवि है। इसके विपरीत जहां जनता आपसी मतभेदों को भुलाकर समानता और त्याग का भाव रखेंगे। उनके देश की छवि सकारात्मक होगी। राष्ट्र प्रेम का मूल मन्त्र यही है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समानता का ध्यान रखना चाहिए। यदि कोई मनुष्य अपने देश के लिए कितना प्रेम करता है, इसे प्रमाणित करने के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह अनेकों सौगन्ध खाये। उसका जीवन चरित्र ही साफ झलकता है।

जनता के बीच में जीतना आपसी प्रेम होगा, वहां राष्ट्र प्रेम की भावना उतनी ही मजबूत और दृढ़ होगी। प्रेम के अभाव में मनुष्य का कोई अस्तित्व ही नहीं है और न ही आपसी प्रेम के बिना राष्ट्र प्रेम की कल्पना की जा सकती है। प्रेम ही वह साधन है जो मनुष्य को मनुष्य से और सारे देश राष्ट्र को जोड़कर रखने में समर्थ हैं।

अन्त में नेताओं को महाराज कृष्ण का सन्देश

देना आवश्यक समझता हूँ।

यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत्त देवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरूते लोकोस्तदनुवर्तन्ते।।गीता.3/21)

श्रेष्ठ बड़ा पुरुष जैसा जैसा आचरण करता है, संसार का साधारण मनुष्य भी वैसा वैसा ही करता है। जिस वस्तु को वह प्रमाण मानकर चलता है संसार उसी आदर्श का अनुशरण करता है। अतः प्रत्येक नेता बड़े व्यक्ति को अपना चरित्र जनता के सामने रखना चाहिए। मंचो से बोलते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि मेरा बोलना राष्ट्र के हित में है। या केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति करने वाला है।'' महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश छठे समुल्लास में लिखते हैं ''यथा राजा तथा प्रजाः'' जैसा राजा है वैसी ही उसकी प्रजा होती है। इसलिए राजपुरुषों को अति उचित है कि कभी दुष्टाचार न करें। किन्तु सब दिन धर्म न्याय से वर्तकर सब के सुधार का दृष्टान्त बनें।

राष्ट्र के प्रति मर्यादा पुरुषोत्तम राम की भी भावनाओं को जीवन में उतारें। लंका पर विजय करने पर विभीषण को राजसिंहासन पर बैठा दिया गया। उस समय विभीषण और लक्ष्मण आदि द्वारा प्रस्ताव रखा गया कुछ दिन यहां रहकर विश्राम किया जाये उत्तम रहेगा। तब श्री राम के द्वारा अपने राष्ट्र के प्रति कितने सुन्दर भाव व्यक्त किये गये हैं-

न मे रोचते लक्ष्मण स्वर्ण मयी लंका।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

-धर्ममुनि

आदर्श कर्मठता

एक अमरीकन फर्म ने जापान में अपना व्यापार आरम्भ किया और अपने कार्यालय में काम करने के लिए उसे जापान के ही लोगों को नियुक्त किया साधारणतया अमरीका के कार्यालय में काम के पांच ही दिन होते हैं। शनिवार और रविवार को अवकाश रहता है अमरीका की इस फर्म ने जापान में भी वही नीति-रीति अपनाई। सोमवार से शुक्रवार तक काम तथा शनिवार एवं रविवार को अवकाश। फम्र के सभी जापानी कर्मचारियों ने इसका विरोध किया, यह बात सभी को आश्चर्य में डालने वाली थी, विरोध का कारण समझ में न आया, अन्त में कर्मचारियों से पूछा गया, आप लोगों को क्या कष्ट है।

जानते है इसका उत्तर क्या दिया गया? उन लोगों ने कहा हमें दो छुट्टियां नहीं चाहिए, हमारे लिए एक ही छुट्टी प्रयाप्त है, कारण क्या बताया, '' यह भी सुनिये'' यहां की जनता मानती है कि अधिक छुट्टियों से हम आलसी बन जायेंगे, परिश्रम करने में हमारा मन न लगेगा और इससे भी अधिक हानी तो यह है कि छुट्टी के दिन हम लोग और दिनों की अपेक्षा व्यय भी अधिक करते हैं जो छुट्टी हमें आर्थिक बोझ से दवा दें और मानसिक दास्ता बढ़ा दे, वह हमारे जीवन में नहीं खप सकती।

कैसी स्वस्थ मन स्थिति है, वस्तुतः ऐसी ही मन स्थिति देश तथा उसकी प्रजा को ऊंचा उठा सकती है। श्रम का जीवन के साथ गहरा सम्बन्ध है, इस प्रजा ने श्रम करके जगत् के साथ गहरा सम्बन्ध है। इस पूजा ने श्रम करके जगत् के दूसरे देशों को बता दिया कि कैसे टूटे फूटे खन्डहरों को भव्य प्रसादों में परिवर्तित किया जा सकता है। काश हमलोग भी इससे कुछ शिक्षा लें सकते।

- ऋषि राम कुमार, 112, सैक्टर-5, पार्ट-3, गुरुग्राम (हरियाणा)-122001, मो. 9968460312

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

उपासक उपास्य संबंध

– नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

कोई भी उपासक किसी की उपासना क्यों करता है? उपासना की विधि क्या है और उपास्य देव कौन है? ये प्रश्न किसी भी उपासक के मन में उपासना के लिए उद्यत होने से पूर्व अक्सर ही उठते हैं। किसी भी उपासक के लिए अपने उपास्य देव को जानना, मानना, फिर उपासना करते हुए उस उपासना के उद्देश्य को प्राप्त करना होता है। उपास्य देव को पहचानने से पूर्व उपासक को अपनी स्थिति का बोध होना अत्यंत आवश्यक है। आइये इन प्रश्नों पर एक-एक कर विचार करते हैं।

प्रथम उपासक कौन? जिसमें भी किसी गुण विशेष का अभाव और उसके मन में उस गुण को प्राप्त करने की बलवती इच्छा जब उत्पन्न हो जाती है तो वह व्यक्ति सर्वप्रथम उस गुण विशेष सम्पन्न मित्र जो उसे वह गुण देकर कष्ट से मुक्त कर सके, उसकी खोज करता है। सरल शब्दों में यदि कोई निर्धन व्यक्ति धन चाहता है तो वह धन प्राप्ति की इच्छा से अपने ऐसे किसी मित्र की खोज करके उपासना करेगा जो धन प्रदान कर निर्धनता के कष्ट से मुक्ति दिलवा सके। इसी प्रकार रोगी वैद्य की, भूखा किसी लंगर चलाने वाले की खोज करके उपासना करता है। दूसरे शब्दों में उपासक वह है जिसमें किसी गुंण का अभाव है और उस गुण के अभाव के कारण वह कष्ट की स्थिति में है। उपासक के लिए आवश्यक हो जाता है कि उसे इस बात का बोध हो कि उसमें किस गुण का अभाव है और उस अभाव के कारण होने वाले कष्ट को दूर करने के लिए उसमें उस गुण का ग्राह्यता के लिए बलवती इच्छा उत्पन्न हो। तीसरा वह किसी ऐसे व्यक्ति को खोजे जिसमें वह गुण पूर्व से ही विद्यमान हो। चौथा गुणी उपास्य उस गुण को उपासक को देने की इच्छा भी रखता हो। अन्तिम उपासक को अपने उपास्य देव की उपासना विधि का ज्ञान हो।

सामान्य लोकव्यवहार में हम अबोध मनुष्य उपासना के नाम पर क्या प्रपंच करते है? तेजी से गाड़ी चलाते सड़क के किनारे किसी पीर की मजार या मन्दिर के सामने धीरे से मस्तक झुका देना या फिर बहुत किया तो मन्दिर में जाकर किसी मूर्ति के समक्ष माथा झुकाना और चढ़ावा चढ़ा कर अपनी मांग रख देना जैसे उपासना ना हुई कोई व्यापार हो गया। ''सवा मणी करूंगा मेरी लाटरी लगा दे'', ''मेरी मन्नत पूरी होने पर ये चढ़ावा चढ़ाऊंगा'' या फिर ''हे बजरंग बली तोड़ दुश्मन की नली।'' इन सब में ना तो उपासक को अपनी स्थिति का बोध है ना उपास्य देव का और ना ही उपासना की विधि का। यहां उपासक को पता ही नहीं कि उसमें कौन सा गुण न्यून है और वह गुण उपास्य देव के पास है या नहीं और वह उसे कैसे पा सकता है। एक चेतन जीव द्वारा जड़ की उपासना से चेतनता की वृद्धि कैसे हो सकती है?

कलियुग के इंसान की उल्टी देखी चाल।
जड़ के आगे चेतना क्यों झुकावे भाल।।

जड़ की उपासना से तो चेतन के भी जड़ बन जाने की संभावना होती है जबकि यदि कोई जड़ पदार्थ किसी समर्थ चेतन कारीगर के हाथ लग जाए तो उसमें गति अवश्य आ जाती है जैसे घड़ीसाज के हाथ में घड़ी और मैकेनिक के हाथ में मोटर। इतना सब समझते हुए भी मनुष्य के रूप में मननशील होकर भी हम उपासक ना हो अपनी स्थिति को जान पाते हैं ना ही अपने गुणों की न्यूनता को और ना ही उपास्य देव जिसके पास वह गुण हों और उन्हें देने की इच्छा और सामर्थ्य रखता हो। आइये इन प्रश्नों के उत्तर खोजते हैं। मनुष्य के रूप में जीव एकदेशीय होने के कारण अल्पज्ञ व अबोध है और ज्ञान प्राप्ति के लिए वह अन्यों पर निर्भर है। सृष्टि के निर्माण से पूर्व और संहार के बाद भी रहने वाला सर्वव्यापी सृष्टिकर्ता सर्वज्ञ है और उस सर्वज्ञ ईश्वर ने सृष्टि के समस्त प्राणियों के लिए वेदरूपी ज्ञान एक नियमावली संहिता के रूप में दिया है। अब अल्पज्ञ उपासक के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह उस सर्वज्ञ प्रभु द्वारा दिए वेद ज्ञान को प्राप्त करे। इसीलिए महर्षि देव

दयानन्द ने वेदों का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सभी आर्यो का परम धर्म बतलाया है। यदि हममें दया की कमी है तो हम परमदयालु परमपिता परमेश्वर से इस गुण को प्राप्त करें। ईश्वर न्यायकर्ता है तो हम भी अपने आचरण व्यवहार में दूसरों के साथ न्याय किया करें। हम अल्पशक्तिमान हैं और किसी भी सर्वहितकारी कार्य की सिद्धि के लिए व निष्काम भाव से यज्ञीय कार्य करने के लिए अपने सही दिशा में किए पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त ईश्वर से प्रार्थना उस शक्ति को प्राप्त करने के लिए व सहाय के लिए करें। वही ईश्वर हमारा सच्चा सहायक व मित्र है। 'इन्द्रस्य युज्य: सखा' कहकर वेद भगवान ने परमात्मा को जीवात्माओं का सच्चा मित्र कहा। ऋग्वेद में 'दूणाशं सख्यं' कहकर स्पष्ट कर दिया कि ईश्वर की मित्रता स्थायी और विश्वसनीय है और इसी मन्त्र में 'गौरसि वीर गव्यते' तथा 'अश्वो अश्वायते भवे' कहकर स्पष्ट कर दिया कि ईश्वर की मित्रता से गाय चाहने वाले को गाय और अश्व चाहने वाले को अश्व मिलता है। जिससे स्पष्ट है कि निष्काम भाव से किए जाने वाले परोपकार के यज्ञीय कार्यो के लिए सही दिशा में किए पुरुषार्थ के उपरान्त उपासना करते हुए हम उपासक मनुष्यों के लिए अपने उपास्य देव से निश्चित ही सहायता प्राप्त होती है। लेकिन यहां यह भी स्पष्ट है कि 'इन्द्रस्य इज्जरत सखा' अर्थात् ईश्वर उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करने के लिए उद्यत हो।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि गुणों के अभाव के कारण हम अल्पशक्ति वाले अबोध, अज्ञानी मनुष्य उन गुणों की प्राप्ति के लिए सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान दयालु सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वव्यापी निराकर ईश्वर की उपासना उन गुणों की प्राप्ति के लिए किया करें और उपासक उपासना करते समय अपने आत्मा को सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मा के आनन्द में निमग्न कर दें और आत्मा परमात्मा के आनन्द में निमग्न होकर नर्तन करने लगे लेकिन वह कभी सत्य और चेतन के आधार के बिना प्राप्त नहीं हो सकता। उपासना करते हुए उपासक उपास्य देव से उन गुणों को प्राप्त करके एकरूप हो जाता है।

-602 जी, एच-53, सैक्टर-20, पंचकूला, हरियाणा, मो. 9467608686

वैदिक सत्संग मण्डल समिति को सम्मान

आर्य जगत् की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी द्वारा स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटोली, रोहतक में आयोजित बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ कार्यक्रम के समापन समारोह में वैदिक सत्संग मण्डल समिति के सदस्यों को पिछले पांच साल से चलाये जा रहे बेटी बचाओ अभियान व्याख्यानमाला जन चेतना अभियान को जो कि स्कूलों/कॉलेजों में चलाया जा रहा है। जिसके तहत मेधावी छात्र/छात्राओं को स्वामी दयानन्द रचित महानग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश व योगीराज श्रीकृष्ण का संदेश गीता प्रदान करके सम्मानित किया जाता है और सर्दियों में जरूरतमंद बेटियों को कम्बल व जर्सीयां प्रदान की जाती है। उक्त सामाजिक कार्यो के लिए वैदिक सत्संग मण्डल समिति के अध्यक्ष पं. रमेश चन्द्र, वैदिक, सुबेदार भरत सिंह, उपप्रधान पं. जयभगवान आर्य महामन्त्री श्री सुभाष आर्य, श्री द्वारका प्रसाद, रिटायर्ड प्रधानाध्यापक व ओम प्रकाश यादव को महर्षि दयानन्द का चित्र व पट्टीका प्रदान करके सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्वामी चन्द्रवेश जी कुमारी पुनम आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष बेटी बचाओ अभियान व संयोजक प्रवेश, पुनम आर्या, डॉ. अनिल आर्य दिल्ली, आर्य युवक परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष दिक्षेन्द्र आर्य व बड़ी संख्या में महिला व पुरुष हाजिर रहे।

वेदज्ञान से ही जीवन का कल्याण

- महात्मा चैतन्यमुनि

अविवेक ही व्यक्ति के समस्त दु:खों का कारण माना गया है। इसलिए जो भी जीवन में सुख चाहता है, उसे विवेकशील होना अनिवार्य है। विवेकी बनने के लिए वेद ही सर्वोत्तम ग्रन्थ हैं, क्योंकि वेद स्वयं परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है। जिस प्रकार सूर्य के अभाव में अन्धकार में डूबकर व्यक्ति ठोकरें खाता है, ठीक इसी प्रकार वेद ज्ञान के अभाव में व्यक्ति भटक जाता है, महर्षि पतंजलि ने अविद्या, अस्मिता, राग-द्वेष और अभिनिवेश को-क्लेश माना है तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अविद्या को ही अन्य क्लेशों का भी जनक माना है। उनके अनुसार अविद्या ही समस्त दु:खों का कारण है। व्यक्ति, समाज, परिवार या राष्ट्र वेदानुयायी बनकर ही सुख, शान्ति और समृद्धि को प्राप्त हो सकता है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने अपना कोई अलग सम्प्रदाय न चलाकर लोगों को एक ही सत् परामर्श दिया कि 'वेदों की और लौटो।' वेद स्वयं ही ज्ञान का पर्याय हैं अत: अज्ञानान्धकार का निराकरण करने के लिए वेदों का स्वाध्याय नितान्त अनिवार्य है। वेद का मनन व चिन्तन करने के लिए प्राचीन काल से ही जन साधारण को वेद के मनीषियों के यहां जाकर ज्ञान प्राप्त करने की परम्परा रही है, जो कालान्तर में लुप्त प्राय होती चली गई। मगर आर्य समाज जैसी उत्कृष्ट संस्था द्वारा आज भी वेदस्वाध्याय के प्रति जनसाधारण में जागरूकता पैदा करने के लिए वेद सप्ताह अर्थात् श्रावणी पर्व का आयोजन किया जाता है। आर्य समाज संस्था की यह विशेषता है कि यह किसी मत-मजहब को लेकर व्यक्तियों को बांटने का कार्य नहीं करती, बल्कि परमात्मा के ज्ञान वेद को लेकर समूची मानवता को एकता के सूत्र में बांधकर तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार द्वारा व्यक्ति के चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। श्रावणी पर्वके अवसर पर वेद स्वाध्याय के प्रति लोगों में न केवल रूचि पैदा की जाती है, बल्कि इस अवसर पर बड़े-बड़े पारायण यज्ञों का भी आयोजन किया जाता है। यह एक अत्यधिक स्तुत्य प्रयास है अन्यथा आज प्राचीन संस्कृति को लोग भूलते चले जा रहे हैं और उनके प्रकार के सम्प्रदायों में बंटकर वातावरण को स्वार्थमय तथा विषाक्त बनाते चले जा रहे हैं।

वेद हमें भौतिक और आध्यात्मिक रूप से सम्पन्नता प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। आज व्यक्ति भौतिकतावाद में इतना अधिक संलिप्त हो चुका है कि इसे प्राप्त करने के लिए वह पूरी तरह से विवेकहीन हो चुका है। अनैतिकता का सहारा लेकर व्यक्ति उन सुख-सुविधाओं को जुटाने में लगा हुआ है, जिनसे तृप्ति मिलने वाली नहीं है। जो व्यक्ति को तृप्ति तक पहुंचा सकती है, उस आध्यात्मिकता को सब भूलते चले जा रहे हैं। शारीरिक आवश्यकताओं की भूख इतनी अधिक बढ़ गई है कि व्यक्ति इससे आगे कुछ भी सोचने के लिए तैयार नहीं है। ये भौतिक प्रसाधन उसे अन्तत: तृप्ति देने वाले नहीं है। इस सत्य का भी उसे पग-पग पर आभास होता रहता है, मगर मृगतृष्णा रूपी भटकाव में वह निरन्तर भटकता चला जा रहा है। ये सांसारिक भोग उसे हर बात की चेतावनी देते है। कि हममें तुम्हें तृप्त करने का सामर्थ्य नहीं है, मगर व्यक्ति बार-बार भोगों में डुबकर और अतृप्त होकर भी वहीं तृप्ति खोज रहा है जहां वह है ही नहीं, वह इस जीवनरूपी चौराहे पर खाली खड़ा है। अतृप्त है, रो भी रहा है, तड़प भी रहा है, मगर पुन:-पुन: भौतिक भोगों की आग में स्वयं को झोंकता भी चला जा रहा है। उसकी स्थिति ठीक इस प्रकार की हो गई है, मानों कोई अपनी हथेली पर आग का अंगारा लेकर खड़ा हुआ हो, उसे छोड़ने के लिए भी तैयार नहीं है और उसकी जलन के कारण तड़प भी रहा हो। वह इतना भी ज्ञान नहीं रखता कि जलन देने वाली अग्नि को तो उसने स्वयं ही पकड़ रखा है।

हम चिन्तन करें कि आखिर मानव-मानव के भीतर ये दूरियाँ क्यों बढ़ती चली जा रही है? होता यह है कि अपने तप, त्याग और साधना से कोई भी व्यक्ति जब उच्चतम स्तरों को छू लेता है, तो उसके बहुत से अनुयायी भी बन जाते हैं, ये अनुयायी उन आदर्शों पर तो चल नहीं पाते, मगर मात्र लकीर के

फकीर बन जाते हैं। उस महापुरुष ने जिस तप और त्याग से जीवन की ऊँचाइयों को छूआ था, उस प्रक्रिया को नजरअंदाज करके उस महापुरुष की ही पूजा अर्चना शुरु कर दी जाती है। आज हमारे समाज में ऐसे पैगम्बरों, अवतारों और गुरुओं की मानों बाढ़ सी आ गई है। गुरु होना, तो बुरी बात नहीं मगर गुरुडम प्रथा ने इस समाज का बहुत अहित किया है। इससे मानवीय एकता को बहुत बड़ा धक्का लगा है तथा परमात्मा के स्थान पर व्यक्तियों की पूजा होने लगी है। इस व्यक्तिपूजा ने अन्य अनेक प्रकार की कुरीतियों को भी जन्म दिया है। इसी के आधार पर व्यक्तियों द्वारा बनाए गए अलग-अलग ग्रन्थों और उपदेशों को प्रमाण मानने की अज्ञानता का भी जन्म हुआ है। अलग-अलग नामों और पूजा पद्धतियों ने एक मानव धर्म को अनेक सम्प्रदायों में बाँट दिया है। यह एक अटल सत्य है कि कोई भी महापुरुष परमात्मा नहीं बन सकता है और अल्पज्ञानी होने के कारण न ही उसके द्वारा दिया गया ज्ञान निर्भ्रान्त और पूर्णतः सत्य हो सकता है। मगर आज जैसे मानों अन्धे ही अन्धों को रास्ता दिखा रहे हैं। इसलिए अज्ञानता के गड्डे में गिरकर चतुर्दिक विनाश हो रहा है। तथाकथित इन भगवानों की भीड़ में परमात्मा कहीं खो गया लगता है और मत-मजहब एवं सम्प्रदायों की अज्ञानता में मानवीय गुणों का ह्रास हुआ है। एक सामुहिक सोच जिससे हमारी चतुर्दिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होना था, विलुप्त हो गई है। अतः आज इस बात की परम आवश्यकता है कि मानव मूल्यों की पुनः स्थापना करने के लिए एक सामूहिक सोच का विकास किया जाए, जो वेद के आधार पर ही हो सकती है। क्योंकि एकमात्र वेद पूर्णतः सार्वभौमिक और परमात्मा की सत्य वाणी है।

-वैदिक वशिष्ठ आश्रम, महादेव, सुन्दरनगर, जिला-मण्डी (हिमाचल प्रदेश)

जीवन

व्यवहार मीठा न हो तो, हिचकियां भी नहीं आती
बोल मीठे न हो तो कीमती मोबाइलों पर
घंटियां भी नहीं आती।
घर बड़ा हो या छोटा, अगर मिठास न हो
तो इंसान तो क्या, चीटियां भी नजदीक नहीं आती
जीवन का 'आरम्भ'' अपने रोने से होता है और
जीवन का 'अंत' दूसरों के रोने से,
इस 'आरंभ और अंत' के बीच का समय भरपूर
हास्य भरा हो, बस यही सच्चा जीवन है।
हे प्रभु! न किसी का फेंका हुआ मिले,
न किसी से छीना हुआ मिले,
मुझे बस मेरे नसीब में लिखा हुआ मिले,
बस इतना देना मेरे मालिक अगर जमीन पर बैंठू
तो लोग उसे मेरा बड़प्पन कहें, मेरी औकात नहीं।

-श्रीमती सुदेश सन्दूजा धर्मपुरा बहादुरगढ़

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर

28 मई 2017 से 4 जून 2017

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में वार्षिक शिविर 2017, भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय रेवाड़ी में दिनांक 28 मई 2017 से 4 जून 2017 तक लगाया जायेगा।

वीरांगनाओं को वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान, व्यक्तितत्व विकास एवं आत्मरक्षण प्रशिक्षण शिविर में भेजने के लिए सम्पर्क करें।

साध्वी डॉ. उत्तमायति	मृदुला चौहान	आरती खुराना
प्रधाना	संचालिका	सचिव
	9810702760	9910234595

शिष्टाचार

– नरेन्द्र अहूजा 'विवेक'

मनुष्य का आचरण एक दर्पण है जिसमें उसका प्रतिबिम्ब साफ दिखाई देता है। उसके शिष्टाचार से पता चलता है कि वह कुलीन है अथवा अकुलीन। जिस प्रकार एक साफ गिलास में यदि पानी भर दिया जाये तो भी वह पीने के योग्य नहीं हो सकता ठीक उसी प्रकार सुन्दर शरीर होने के बावजूद यदि मनुष्य का आचरण शिष्ट नहीं है तो वह सम्मान नहीं पा सकता। शिष्टाचार मनुष्य के आंतरिक सौन्दर्य का पैमाना है। शास्त्र पढ़कर ज्ञान होने पर भी यदि उस पर आचरण ना किया जाये तो उस ज्ञान का कोई लाभ नहीं वस्तुतः वह पढ़ा लिखा मूर्ख है। विद्वान् वही जो पढ़े और सुने हुए वेदादि शास्त्रों के अनुकूल शिष्ट आचरण करता है। वेदादि शास्त्रों को पढ़े चिंतन मनन करे लेकिन उस एक बार पढ़कर चिंतन मनन किये ज्ञान पर आचरण बार-बार लगातार करे। शिष्टाचार केवल किताबों में पढ़कर सपनों में नहीं सीखा जा सकता उसे तो मनुष्य अपने जीवन में हर बार लगातार करते हुए यथार्थ की कठोर शिलाओं पर घिस कर मूर्त रूप देता है।

शिष्टाचार मनुष्य जीवन का एक अत्यंत आवश्यक अंग है इसलिए जीवन में प्रगति के लिए इस धारण अत्यंत आवश्यक है। धर्मशूत्र में शिष्ट के लक्षण लिखते हुए कहा गया है-

शिष्टाः खलु विगमत्सराः, निरंहकाराः कुम्भीधान्याः, अलोलुपाः, दम्भ दर्प लोभ मोह क्रोध विवर्जिताः।

अर्थात् धर्मसूत्र के अनुसार शिष्ट उन्हें कहते है जिनमें ईर्ष्या, अभिमान, धनसंग्रह की इच्छा लालच, दम्भ, दर्प, लोभ, मोह, क्रोध नहीं होता। मनुष्य के शिष्टाचार से उसके गुणों, शिक्षा, रूचि और सभ्यता का पता चलता है महान दार्शनिक देव दयानन्द **स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश** में शिष्टाचार और शिष्ट को परिभाषित करते हुए लिखते हैं ''शिष्टाचार जो धर्माचरण पूर्वक ब्रह्मचर्य से विद्या ग्रहण कर प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सत्य असत्य निर्णय करके सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग करना है, यही शिष्टाचार है और जो इसको अपने जीवन में करता है वह शिष्ट कहलाता हैं ''शिष्टाचार मानव द्वारा जीवन में अपनाने योग्य आचरण है। एक सामान्य व्यवहार भी यदि हम जीवन में पालन करें तो शिष्ट व्यवहार और आचरण हम स्वयं दूसरों के साथ किया करें।

जिस प्रकार यज्ञ की अग्नि और धुंआ उंचाई की ओर जाता है और सभी को लाभान्वित करता है उसी प्रकार मनुष्य अपने जीवन में शिष्टाचार और त्याग की अग्नि प्रज्ज्वलित करके सद्कर्मों की आहुति देते हुए अपनी कीर्ति को बढ़ा सकता है। शिष्टाचार बुरे लक्षणों को नष्ट करता है और इससे कीर्ति और आयु बढ़ती है। केवल शास्त्रों की पुस्तकें पढ़ने से कुछ नहीं सीखा जा सकता जब तक स पढ़े या सुने हुए वेदादि शास्त्रों के ज्ञान को शिष्टाचार के रूप में जीवन में आचरण में ना अपना लिया जाये। इसीलिए वेद भगवान का आदेश भी है।

शिष्टाचार के लिए कोई पहले से तैयार राजपथ नहीं है। माता-पिता और आचार्य शिष्टाचार सिखाने के कारखाने हैं इससे विद्या पाकर परिस्थिति के अनुसार शिष्ट आचरण करने वाला बालक ही ज्ञानी बनता है। आर्य संस्कृति तो शिष्टाचारियों के उदाहरणों से भरी पड़ी है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर कृष्ण, वर्तमान काल में महर्षि देव दयानन्द सरीखे अनुकरणीय जीवन हमारे सामने हैं हम यदि इनके जीवन वृतांत से सीख लेकर अपने जीवन में शिष्टाचार के उन गुणों को धारण करके जीवन यापन करते हैं तो निश्चित् रूप से अपने शिष्टाचार के कारण जीवन में सदैव सफल होंगे। मो. 8467308686

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

माता-पिता की स्थिति

- ऋषि राम कुमार

आजकल जो माता-पिता की स्थिति घरों में है कुछ आपको बताने की कोशिश करता हूं, इस भागदौड़ की जिन्दगी में हर आदमी पैसे की दौड़ में इतना घिर चुका है कि किसी के पास परिवार के लिये समय है ही नहीं, धन की लालसा बहुत ही प्रबल हो गई है घर गृहस्थी को चलाने के लिए पैसे का होना भी अति आवश्यक है फिर भी व्यक्ति जितना समय दे पाता है परिवार को दे रहा है।

प्रश्न उठता है कि माता-पिता की घर में क्या स्थिति है हर घर की अपनी समस्यायें है इसलिए सबका बराबर आकलन नहीं किया जा सकता, लगभग घरों में जो माता-पिता की स्थिति है वो नहीं है जो होनी चाहिये इसका अर्थ यह नहीं है कि जहां स्थिति माता-पिता की अच्छी है हम उनको दरकिनार नहीं कर सकते, उनके बारे में लिखना अति आवश्यक है, बहुत परिवार ऐसे हैं जहां बच्चे अपने माता-पिता की खूब सेवा करते हैं घर की बहुयें भी बहुत सेवा करती है। मैं उन बच्चों को साधुवाद देता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि ऐसे परिवारों के अच्छे संस्कार बने, रहें, क्योंकि संस्कारों से ही अगली पीढ़ी पर फर्क पड़ता है, ऐसे परिवारों को देखकर श्रवण कुमार की याद आ जाती है।

कुछ परिवार ऐसे भी हैं जहां माता-पिता की स्थिति शोचनीय है घर में लड़ाई झगड़ा रहता है ऐसे परिवारों में माता-पिता की स्थिति कुछ दयनीय है इसका कारण घर में आमदनी कम भी हो सकता है लेकिन यह मुख्य कारण नहीं है क्योंकि बहुत परिवार ऐसे है जो निर्धन हैं आमदनी कम है लेकिन बच्चे धार्मिक प्रवृत्ति के है कोई गलत आदत नहीं है ऐसे परिवारों में माता-पिता की स्थिति अच्छी है। मुख्य कारण है बच्चों में नशे की आदत का होना, जिससे घर में झगड़ा रहता है और वहां माता-पिता की स्थिति और घर की स्थिति सोचनीय हो जाती है।

वो माता-पिता जिन्होंने इन बच्चों के लिए सब कुछ किया अपनी पूरी जिन्दगी भागदौड़ करते रहते ताकि मेरे बच्चे समाज में अच्छा स्थान प्राप्त कर सकें, लेकिन उनकी सारी इच्छायें मिट्टी में मिल जाती हैं कुछ घरों में पैसे की अधिकता है लेकिन नशे ने घर की स्थिति को बिगाड़ रखा है जो कि परिवार के लिए बड़ा दु:खदायी है, अब भी समय है संभलिये नशे की आदत को समाप्त कीजिए, आपका परिवार स्वर्ग बन जायेगा, आपके माता-पिता को आप पर बहुत उम्मीदें है। अब वो बूढ़े हो गये हैं उनको अब आराम की आवश्यकता है इस उम्र में बीमारी भी एक मुख्य समस्या होती है।

बच्चों को कुछ अपने फर्ज को समझना चाहिए, क्योंकि माता-पिता ने आपके लिये बहुत कुछ किया है अब आप इस अवस्था में उनका ध्यान रखें, अगर आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे तो कल आपके बच्चे भी आपकी सेवा करेंगे यह तो एक परम्परा है बच्चे भी सब कुछ देखते हैं मेरे पिताजी एक कहानी सुनाया करते थे जो कि इस प्रकार है।

एक नौजवान जिसका नाम मोहन था वो अपने पिता जी के साथ घर में रहता था मोहन की माता जी नहीं थी कुछ दिन दिन के बाद मोहन की शादी हुई, पहली रात को ही पत्नी ने मोहन से कहा ये बैठक में कौन खांस रहा है मोहन ने कहा, मेरे पिताजी हैं मोहन की पत्नी बोली मुझे यह डिस्टरबैन्स पसन्द नहीं है, मोहन बोला मैं सुबह तक कोई न कोई प्रबन्ध कर दूंगा, मोहन प्रात: उठकर अपने पिताजी को सैर कराने के लिए चला, पिताजी बहुत खुश हो मन में सोच रहे थे बहू अच्छे घराने की लगती है जो आज मेरा लड़का मुझे सैर के लिए ले जा रहा है मोहन पिताजी को थोड़ी दूरी पर एक बणी (जिसमें कुछ वृक्ष और पानी का तालाब भी होता है।) में ले गया यहां पर झोपड़ी पहले ही बना आया था, झोपड़ी में पानी का मटका भी रख दिया था तथा बिस्तर और खाट पर बैठा दिया और बोला, पिताजी चिन्ता मत करना, मैं सुबह शाम खाना यहां दे जाया करूंगा, पिता जी बोले मेरे लिए घर हो या जंगल मुझे कुछ फर्क नहीं पड़ता, मोहन थोड़ी देर में घर का बहाना बनाकर चल पड़ा, मोहन एक पेड़ के पीछे छुपकर खड़ा हो गया, यह सुनने के लिए कि पिता जी क्या कहते हैं थोड़ी देर के बाद चुप होकर बैठ गये, मोहन जो वहीं पर खड़ा था पिताजी के पास आया और बोला, पिता क्या बात है आप पहले हंसे और बाद में रोये, पिताजी बोले बेटा मैं पहले हंसा इसलिए कि मुझे भगवान के इंसाफ पर हंसी आ रही थी कि भगवान कितना न्यायकारी है, मोहन बोला पिताजी भगवान को क्या ऐसा न्याय

किया है जो आपको हंसी आई। पिताजी बोले बेटा आज से 25 साल पहले मैं भी अपने पिता जी को यहीं छोड़ गया था, इसलिए मैं हंसा कि ..... जो किया भगवान ने मुझे वैसा ही फल जिन्दा रहते ही दे दिया, मोहन बोला पिताजी आप फिर रोये क्यों? पिता जी बोले बेटा रोना इसलिए आ गया कि आज से 25 साल के बाद मेरा बेटा भी यहां पर आयेगा, यही सोचकर मुझे रोना आ गया, क्योंकि कोई भी पिता नहीं चाहता कि उसके बेटे को दुःख हो, अब मोहन कहने लगा पिताजी आप वापिस घर चलो, पिताजी बोले नहीं बेटा, अब मैं यहीं पर ही रहूंगा, मैं घर नहीं जाना चाहता, मोहन घर चला गया।

कहने का तात्पर्य यही है कि हम जो भी कर रहे है उसका फल हमें अवश्य ही मिलता है फल मिलने में देर हो सकती है लेकिन अंधेर नहीं हो सकता, अब भी समय है यह घर परिवार हमारा है हमने ही इसे ठीक रखना है दूसरों के कहने पर नहीं चलना, अपने दिल से सोचों आप सब कुछ कर सकते हैं आप माता और अपने बच्चों के बीच की कड़ी है आपको समझदारी से काम लेना है, मेहनत कीजिए मेहनत की कमाई सच्ची कमाई होती है, नशे से दूर रहें सूझ बूझ से काम लें, परिवार को एकजुट रखें उसमें सबको लाीा है संयम से काम लें झगड़ा नहीं होगा, माता-पिता की कोई विशेष इच्छायें नहीं होती, माता-पिता कभी भी बच्चों की बदनामी नहीं करते, उनको दुनिया का पूरा तर्जुबां होता है, वो आपकी मजबूरियों को समझते हैं व्यग्यात्मक भाषा लड़ाई की जड़ होती है अपने बच्चों में अच्छे संस्कार डालें।

माता-पिता ने अपने समयं में जो मेहनत की वो सब आपके लिये ही थी, जो भी सोचा आपके लिए ही सोचा, आप संयम और शान्ति से काम लें आपका घर स्वर्ग के सामान हो जायेगा, सेवा जिन्दा माता-पिता की होती है, मरने के बाद सेवा नहीं होती, कुछ लोग माता-पिता के मरने के बाद उनके चित्र पर फूल चढ़ाते है जब वो जिन्दा होते है उनकी सेवा नहीं की, अब उनके फोटो पर हार डाल रखे हैं दुनिया को दिखाने के लिए नाटक मत करो, सच्ची सेवा वही होती है जो जिन्दा रहते माता-पिता की सेवा करे, सच्चा भगवान तो आपके माता-पिता के रूप में आपके घर में बैठा है बस आपको सिर्फ पहचानना है इस प्रकार थोड़ी सी समझदारी से आपका परिवार सुखी रह सकता है और माता-पिता की भी स्थिति भी अच्छी हो जाये भी आपके माता-पिता एक ऐसी रोशनी है जिससे आपका परिवार रोशन हो जायेगा, माता-पिता को भूलना भगवान को भूलने के समान है।

माता-पिता ने जो आपके लिये चिराग जलाया है आपके भी अपने बच्चों के लिए चिराग जलाना है ताकि उसकी रोशनी से सारा परिवार जगमगा उठे, बस आपके माता-पिता की खुशी मिल जायेगी, उनकी आत्मा प्रसन्नता से झूम उठेगी, आपका नाम श्रवण कुमार की तरह लोग याद रखेंगे।

"कोई देवी देवता नहीं पूर्ण भगवान है माता-पिता"

- 112, सैक्टर-5, पार्ट-3, गुड़गांव (हरियाणा)

इंसान की प्रथम गुरु होती है मां

इंसान की प्रथम गुरु होती है मां,
सृष्टि तुमसे ही तो शुरु होती है, मां,
तुम हो ज्योति तो दीपक होती है मां,
भगवान की सर्वाधिक कृति होती है मां,
इंसान की प्रथम गुरु होती है मां।
दुनिया के दुःख दर्द मां के है पहचाने,
पांव में पड़े छालों को मां भला क्या जाने,
सहनशीलता की पूरी खान होती है मां,
हार और जीत से बहुत उपर होती है मां,
इंसान की प्रथम गुरु होती है मां।
मां के कदमों में मेहनत का निशां मिलता है,
मां वो जज्बा है तो दिल के रंतू से चलता है
मां को रोकने की ताकत फरिश्तों में भी नहीं,
आस्मां से ऊंचे इरादों की होती है मां,
इंसान की प्रथम गुरु होती है मां।
मां को जीने और मरने का वक्त मिला ही कहो,
मां ने बच्चों से गिला कभी किया ही कहां,
प्रातः काल सबसे पहले उठ जाताी है मां,
न जाने कब रात को सोती है मां,
इंसान की प्रथम गुरु होती है मां।
मां बच्चों के लिए जूझती सारी जिन्दगी,
मां तो शमा है जो जलती सारी जिन्दगी,
मां के सब्र की सीमा पृथ्वी से भी गहरी है,
संसार में सबसे महानतम होती है मां,
इंसान की प्रथम गुरु होती है मां।

- ऋषि राम कुमार

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओमूप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु. श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
42. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
43. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
44. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
45. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
46. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
47. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
48. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
49. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
50. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
51. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
52. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
53. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
54. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
55. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
56. यज्ञ समिति, झज्जर
57. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
58. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
59. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार, दिल्ली
60. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
61. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा, गुडगांव, (हरियाणा)
62. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
63. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
64. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
65. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
66. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
67. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
68. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
69. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुड़गांव
70. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
71. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
72. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़

सब्जियों के छिलकों में छुपे हैं कई सारे गुण

हम हमेशा सब्जी के छिलकों को उतार कर फेंक देते हैं पर ये छिलके आपकी दमकती त्वचा स्वस्थ शरीर और शारीरिक मजबूती का कारण बन सकते हैं। इनको फेंकने के बजाए इनसे सूप सलाद, जूस या मसूदी बना कर फायदा उठा सकते हैं। (1) तरबूज के बीज-तरबूज के बीजों में आयरन, जिंक और कॉपर बहुतायात होता है इससे प्रजनन क्षमता मजबूत होगी और दिल स्वस्थ होगा। (2) तरबूज के छिलका-तरबूज का छिलका, सफेद या हरा रंग का होता है जो कि सिट्रोनेल्ला नामक पदार्थ से मिलकर बनता है। इसमें अमीनों एसिड की मात्रा काफी होती है जिससे शरीर में रक्त की वाहिकाओं की क्रिया सुचारू रूप से चलती है। (3) कीवी का छिलका-डार्क ब्राउन रंग के बालों वाले कीवी के छिलके, फाइबर और पोषण से भरपूर होते हैं। इनमें विटामिन सी की मात्रा काफी ज्यादा होती है। (4) गाजर और शलजम के पत्तों में कैल्यिम, मैग्नीशियम, नियासिन, लोहा, जस्ता, विटामिन बी व के.और एंटीऑक्सीडेंट होते हैं। जो कि कैंसर जैसी घातक बीमारी से लड़ने के शक्ति प्रदान करते हैं। (5) ब्रोकली के पत्ते और डंठल: ब्रोकली बनाते समय हम उनके डंठल ओर पत्ते को फेंक देते हैं। इनमें विटामिन ए की मात्रा बहुतायत में होती हैं। (6) प्याज के छिलके और लहसुन की परत इनमें एंटी-ऑक्सीडेंट की मात्रा काफी ज्यादा होती है, जो शरीर को सूजन और एलर्जी से बचाता है। (7) आजवाइन की पत्तियां: आजवाइन की पत्तियों में इसके तने या बीज से पांच गुना ज्यादा कैल्शियम और मैग्नीशियम होता है। इसमें विटामिन सी की मात्रा भी बहुत होती है यह आपके दिल को स्वस्थ रखता है और बढ़ती उम्र के लक्षणों को बाहर आने से बचाता है इससे आपका रक्तचाप नियंत्रित रहता है और कैंसर विरोधी गुण भी इसमें होते हैं। (8) आलू के छिलके:- आलू के छिलकों में कैलिशयम विटामिन बी कॉम्प्लेक्टस, विटामिन सी, आयरन आदि होते हैं। ये सब हमारे शरीर के लिए लाभदायक होते हैं।

- स्वामी सुरेन्द्र विजय शुक्ल, इन्दौर मध्य प्रदेश, मो. 9837293001

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

स्वस्थ और लम्बी आयु पाने के लिए करें भरपूर तैयारी

– डॉ. बी.बी. गिरि

आज से ही नहीं महाभारत के दौर से चला आ रहा है कि हम न तो मरना चाहते हैं और न ही यह स्वीकार करना चाहते हैं कि उम्र के साथ बूढ़ा होना स्वाभाविक है। दरअसल इसके लिए हम कभी तैयार नहीं होते। आज पूरी दुनिया में लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा समय तक जवान बने रहने की धुन सवार है। हमारा देश भी इसमें अलग नहीं है। भले हमारे यहां कभी उम्र और अवस्थाओं को परिभाषित करने वाले वर्णाश्रम की व्यवस्था रही हो आज यह नशा भारतीयों पर भी तारी है कि वह दूसरों की तरह ताउम्र जवान बने रहना चाहते हैं। वैसे जवान बने रहने की चाहत खराब नहीं है बस इसके लिए हमें सबसे पहले इस बात को समझना ज़रूरी है कि हम अपने जीवन के स्तर को कैसे ऊंचा उठाएं? बूढ़े लोगों को किस तरह ज़्यादा लंबा जीवन जीने के लिए प्रेरित करें? शरीर, दिमाग और आत्मा के बीच कैसे एक बेहतर ढंग से संतुलन बनाकर रख सकें? अगर आप वास्तव में गंभीरता से देर तक और सक्रिय जीवन जीना चाहते हैं तो आजमाएं ये टिप्स–

अपने स्वास्थ्य के लिये नियमित चैकअप करायें। जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है, शरीर की मांसपेशियां कमज़ोर होती जाती हैं। ऐसे में शरीर को ताकत देने वाली एक्सरसाइज़ बेहद ज़रूरी होती है ताकि ऑर्थोराइटिस से बचाव किया जा सके।

उम्र के साथ जैसे-जैसे हमारी मांसपेशियां कमज़ोर होती हैं हमारे शरीर को सहारा देने वाले स्केल्टन पर दबाव बढ़ जाता है, जिसके कारण हमारी हड्डियों पर हमारे शरीर का ज़्यादा वज़न पड़ने लगता है। यही वजह है कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ हड्डियों में फ्रैक्चर होने की आशंका बढ़ने लगती है। फ्रैक्चर होने के बाद कई बार व्यक्ति बिस्तर पर पड़ जाता है, जिसके कारण वज़न बढ़ जाता है और हड्डियों पर दबाव बढ़ जाता है।

सही ढंग से खाएं। कुछ लोग अपने प्रति बेहद सचेत होते हैं। खानपान संबंधी आदतों में बेहद नियमित होते हैं, लेकिन कई लोग उम्र बढ़ने के साथ-साथ खानपान को लेकर ज़्यादा अनुशासन नहीं बना पाते जिसका उनकी बढ़ती उम्र के शरीर पर गलत प्रभाव पड़ता है।

उम्र बढ़ने के साथ-साथ खानपान में भी बदलाव करना चाहिए। प्रतिदिन फल खाएं। भोजन में सूखे फल और मेवे प्रतिदिन लें। सूखे मेवों में कई खनिज लवण और ओमेगा-3 जैसे वसा वाले एसिड होते हैं। एक दिन छोड़कर सब्जियों और फलों का जूस पिएं। इसके लिए गाजर, टमाटर, चुकंदर का जूस लिया जा सकता है। अपनी जीभ के स्वाद को अच्छा लगने वाला भोजन ही न करें। भूख को बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थ भी खाएं, भोजन को पूरी तरह से एंज्वाय करें।

उम्र बढ़ने के साथ-साथ अपने दिमाग को पढ़ने के कार्य में लगाएं। इस उम्र में करने के लिए हमारे पास काफी समय होता है। भविष्य की चिंता, परेशानी, तनाव और डर से दूर रहने के लिए हर समय कुछ न कुछ पढ़ने की आदत डालें।

वे लोग जो जीवन के दौर में अपने साथी को खो चुके हैं, उनके लिए अकेलेपन और उदासी से बचने का इससे बेहतर कोई और उपाय नहीं है।

अपने निजी कमरे और बाथरूप को पूर्ण सुरक्षित बनाएं। वहीं बढ़ती उम्र में अक्सर बाथरूम में फिसलकर गिरने या बिना रेलिंग वाली सीढ़ियों पर गिरने वाली दुर्घटनाएं होती हैं। इनसे बचाव के लिए अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करें।

पांव को पूर्ण आराम देने वाले जूते पहनें। जूते ऐसे हों जिनमें पैर घायल न हों क्योंकि इस उम्र में घाव के भरने की क्षमता भी कम हो जाती है।

आपकी आने वाली हर सुबह आपके लिए नया संदेश लाती है। अपनी नई-नई हॉबीज विकसित करें।

अपने जीवन से नकारात्मक विचारों को निकाल बाहर करें।

अपनी त्वचा की खास देखभाल करें। इस पर तेल और क्रीम लगाकर त्वचा की चमक को बनाये रखें। योग और मेडिटेशन करें।

एक आदर्श

- सुरिन्द्र चौधरी

मनुष्य अपने व्यक्तित्व को निखार कर जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सदा प्रयासरत रहता है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए वह अपनी रूचि के अनुसार समय-समय पर किसी न किसी से प्रभावित होकर उसे अपना आदर्श बनाता है और उसके गुणों को अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करता है। उदाहरणत: यदि किसी की रूचि क्रिकेट में है तो वह सचिन तेंदुलकर, डान ब्रैडमैन या किसी अन्य को अपना आदर्श बनायेगा, यदि किसी की रूचि अध्यात्म में है तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती या किसी अन्य को अपना आदर्श बनायेगा। माता-पिता या घर का कोई अन्य सदस्य भी आदर्श हो सकता है।

इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र में कोई न कोई किसी न किसी का आदर्श हो सकता है। यहाँ ध्यान देने योग्य है कि जिसे आदर्श बनाया गया है वह अपने क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ ही हो, ऐसा आवश्यक नहीं है। साथ ही यह भी आवश्यक नहीं है कि आदर्श क्रिकेटर, आदर्श राजनीतिज्ञ या किसी अन्य क्षेत्र में आदर्श मनुष्य का व्यवहार मनुष्य जैसा ही हो। मनुष्य शरीर धारण करने के उपरान्त भी उसका व्यवहार पिशाचिक हो सकता है, इसकी पुष्टि दिन प्रतिदिन समाचार पत्रों तथा अन्य माध्यमों से होती रहती है कि अमुक आदर्श व्यक्ति अदालत द्वारा अपराध में दोषी घोषित किया गया। शायद इसीलिए वेद भी मनुर्भव की बात करता है अर्थात् वेद मनुष्य को मनुष्य बनने की बात कहता है। जब प्रत्येक क्षेत्र में आदर्श हो सकता है तो मनुष्य बनने के लिए भी कोई न कोई आदर्श अवश्य होना चाहिए। मनुष्य बनने के लिए सर्वगुण सम्पन्न ईश्वर से अच्छा आदर्श कोई हो ही नहीं सकता है, परन्तु ईश्वर के अद्वितीय और निराकर होने के कारण आदर्श नहीं बनाया जा सकता है। तो फिर मनुष्य बनने के लिए किसे आदर्श बनाया जाये। सूर्य के गुणों का मंथन करने पर सूर्य एक आदर्श के रूप में मानसपटल पर उभरता है। प्राचीन काल में भी गुरु अपने शिष्य को सूर्य के पीछे चलने के लिए कहता था अर्थात् उसके गुणों को धारण करने के लिए प्रेरित करते हुए कहता था।

मानवक! सूर्यस्यावृत्तमनुव्रजस्व।

सूर्य का एक गुण सबसे समान व्यवहार करना है। सृष्टि बनी तो सूर्य सबके लिए बना। ईश्वर ने सूर्य को किसी एक सम्प्रदाय, किसी एक देश, किसी एक जाति या किसी एक संस्था के लिए नहीं बनाया है। सूर्य अपने प्रकाश और अपनी ऊर्जा से हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी, यूहदी, हिन्दुस्तानी, पाकिस्तानी, चीनी, कांग्रेसी, जनसंघी, गरीब, अमीर, श्वेत, अश्वेत, जड़, चेतन आदि सभी को बिना भेद भाव के समान रूप से लाभान्वित करता है, उसी प्रकार मनुष्य से अपेक्षा है कि वह विश्व के प्रत्येक प्राणी के साथ समान व्यवहार करे। मनुष्य के हृदय में घृणा, ईर्ष्या और शत्रुता की भावना नहीं होनी चाहिए।

सूर्य अपनी किरणों के द्वारा पृथ्वी के जल को वाष्प बनाकर ऊपर खींचता है, परन्तु इस जल को अपने पास नहीं रखता है। बादलों के माध्यम से इस जल को पृथ्वी को वापस कर समाज में खुशहाली लाता है। यहाँ यह संदेश छिपा है कि जिस प्रकार सूर्य कमाये हुए जल की वृष्टि कर देता है, उसी प्रकार मनुष्य भी कमाये हुए धन को समाज के कार्यों में लगा कर समाज को सुखी बनायें क्योंकि कमाये हुए धन को संचित करके तिजोरियों में जमा करना धन को सदुपयोग नहीं है।

सूर्य मनुष्य को दु:ख में न घबराने की प्रेरणा देता है। वर्षा ऋतु में घनघोर काली घटाएं सूर्य को अपने पीछे छिपा लेती है। सूर्य का प्रकाश कई कई दिन तक पृथ्वी पर दिखाई नहीं देता है, दिन के समय भी प्रकाश के लिए अन्य प्रकाश स्त्रोतों पर निर्भर होना पड़ता है। ऐसे समय पर सूर्य कहता है कि एक-न-एक दिन ये काली घटाएँ छिन्न-भिन्न हो जायेगी और मैं फिर चमकूंगा। समय के साथ काली घटाएँ छट जाती है और सूर्य का प्रकाश पृथ्वी पर फिर से दिखाई पड़ता है। सूर्य इस गुण के माध्यम से मनुष्य का आत्मविश्वास बढ़ाते हुए संदेश दे रहा है कि मनुष्य के जीवन में दु:ख रूपी काली घटाएँ सदा रहने वाली नहीं है। मनुष्य को आशावादी बनकर दु:ख रूपी

काली घटाओं से उभरने का प्रयास करना चाहिए।

सूर्य का एक गुण है कीटाणुओं का नाश करना है। सूर्य के प्रकाश के अभाव में अनेक प्रकार के कीटाणु उत्पन्न हो जाते हैं, कीटाणुओं के कारण नाना प्रकार के रोग मनुष्य को घेर लेते हैं। कीटाणुओं का नाश करते हुए सूर्य की किरणें प्रभावित नहीं होती है। जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों से रोग उत्पन्न करने वाले कीटाणुओं का नाश करता है, उसी प्रकार मनुष्य को चाहिए कि न केवल समाज में व्याप्त बुराईयों (अंधविश्वास, जादू टोना आदि) को समाप्त करने के लिए अन्याय, अत्याचार का मुकाबला वेद गर्भित ज्ञान के तेज से करें अपितु अपने आप को भी समाज में व्याप्त बुराईयों से बचा कर रखें।

सूर्य सभी कार्यों को समयानुसार करने की प्रेरणा देता है। सूर्य नियत समय पर उदय होता है, नियत समय पर अस्त होता है। जिस प्रकार सूर्य कभी रविवार या त्योहार का बहाना बना कर देरी से उदय या अस्त नहीं होता है, उसी प्रकार मनुष्य को भी सभी कार्य समय पर करने चाहिए अर्थात् आलस को अपना साथी नहीं बनाना चाहिए। कहा भी गया है कि बीता हुआ समय लौट कर नहीं आता हैं।

सूर्य का एक गुण है अपने केन्द्र को न छोड़ना। ग्रह सूर्य की परिक्रमा लगाते हैं, परन्तु सूर्य किसी के इर्द गिर्द नहीं घूमता है अपितु अपने केन्द्र पर घूमता है। जिस प्रकार सूर्य घूमते समय अपने केन्द्र को नहीं छोड़ता है, उसी प्रकार मनुष्य को भी अपना केन्द्रबिन्दु नहीं छोड़ना चाहिए। मनुष्य का केन्द्रबिन्दु मानवता है। जिस दिन मनुष्य ने मानवता का वध कर दिया, उसी दिन वह कष्टों से घिर जायेगा और उसका जीवन नरक बन जायेगा।

सूर्य का एक गुण चमकना है अर्थात् प्रकाशित होना है। सूर्य स्वयं प्रकाशित होने के साथ साथ अन्य ग्रहों को भी प्रकाशित करता है। सूर्य स्वयं प्रकाशमान है, इसलिए दूसरों को प्रकाश देता है। इस गुण से सूर्य मनुष्य को ऐसे कार्य करने का संदेश देता है जिससे वह न केवल हजारों में अपितु करोड़ो में, अरबों में अलग दिखाई दें। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपने कार्य क्षेत्र में कोई अति विशेष कार्य करके समाज को लाभान्वित करें।

सूर्य अपने कर्त्तव्यों का पालन निःस्वार्थ तथा अहंकारहीन भावना से निष्पादित करता है। मनुष्य को भी चाहिए कि समाज को सर्वोपरि मानकर अपना जीवन निःस्वार्थ तथा अहंकारहीन भावना से समाज सेवा में अर्पित कर दे। आओ सूर्य के गुणों को जीवन में उतार कर मानवता को बचाने का प्रयास करके मानवता पर उपकार करें।

– ए-2/79, सैक्टर-5, रोहिणी, दिल्ली

हंसो और हंसाओ

– रवि शास्त्री, आत्म शुद्धि आश्रम

- अध्यापक-बताओ की पुराने समय में श्रीलंका को सोने की लंका क्यों कहा जाता था?
  विद्यार्थी-क्योंकि कुंभकर्ण वहां दिन रात सोता रहता था।
- टीचर-सोलार एनर्जी (सौर ऊर्जा) से बनी किसी वस्तु का नाम बताओ।
  पप्पु-कुंतीपुत्र कर्ण।
  टीचर-तू तो गधा ही रहेगा।
- गांव में एक नई बहु आई उसकी सासु उससे बोली-बेटी सुबह हो गई है चल गोबर गेरने चलते हैं।
  बहुं-मां मैंने बी.एस.सी की हुई है मैं गोबर पाथुंगी।
  सासू-बेटी वो बिटोड़ा दिखे सै वो एम.एससी वाली का है।
- डॉ. ने थर्मामीटर पत्नी के मुंह में रखकर उसे खामोश रहने के लिए कहा-पति ने अपनी पत्नी को काफी देर तक चुप देखा तो डॉ. से बोला-ये डंडी कितने रूपये की आती है।
- पत्नी-तुमने कभी मुझे सोना हीरा या मोती गिफ्ट में नहीं दिया। पति ने एक मुट्ठी मिट्टी उठाकर पत्नी के हाथ में दे दी।
  पत्नी-ये क्या क्या है?
  पति-मेरी देश की मिट्टी सोना उगले उगले हीरे मोती मेरे देश की मिट्टी।

मन-कमजोरी अंधविश्वास पाखंड की जननी

- श्रीमती सुशीला गुप्ता रांची झारखण्ड

भारतवर्ष ऐसा देश है, जिसके समान भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। दूसरे देशों के लिए जहां इसने आदर्श किया, वहीं यह ईर्ष्या का कारण भी बना रहा। निरन्तर विदेशी आक्रमणों के कारण हमारी निरंतर सामाजिक अवनति होती रही। भारत में फैले पाखंड और अंधविश्वास ने देश को सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचाया। आज अंधविश्वास और पाखंड के नये नये तरीके निकाल कर लोगों को फंसाया जाता है। अब तो टी.वी. चैनलों व आधुनिक संचार माध्यमों के द्वारा इनका बड़ा प्रचार-प्रसार हो रहा है।

फलित ज्योतिष-लोगों के मन की कमजोरी का लाभ उठाने का एक तरीका है फलित ज्योतिष। ये कपोल कल्पित पद्धतियां अवैदिक व स्वार्थी पंडितों की देन है। वेद के छह अंगो में ज्योतिष भी एक अंग है। ज्योतिष के आधार पर ग्रह, नक्षत्र आदि सृष्टिरचना के आकर्षण-नियम का विधिवत् ज्ञान होता है। आर्यसमाज इस गणित ज्योतिष को ज्ञान की एक शाखा के रूप में ही मानता है। फलित ज्योतिष का कोई शास्त्रीय आधार नहीं है।

ज्योतिष के नाम पर लोगों को शुभाशुभ फल बताये जाते हैं। कर्म करने में स्वतन्त्र किये गये मानव का शुभाशुभ फल यदि पहले से ही लिख दिया जाये तो मानव कठपुतली मात्र ही सिद्ध हो जावेगा। ज्योतिषी ने कुछ अनिष्ठ बता दिया तब प्रभावित व्यक्ति असमय में ही निराशा का जीवन जीने लगता है। यदि ज्योति बहुत उज्जवल भविष्य बता देता है, तब अकर्मण्यता को अधिक बढ़ावा मिलता है।

मुहूर्त-दिशा शूल-शुभ अशुभ:

किसी कार्य को आरम्भ करने, किसी यात्रा के लिए प्रस्थान करने एवं संस्कार कगने के लिए समय एवं तिथि आदि का निश्चय करना ही मुहूर्त है। पलक झपकने का नाम निमेष है। 18 निमेष की एक काष्ठा, तीस काष्ठा की एक कला, तीस कला का एक मुहूर्त और तीस मुहूर्त का एक दिन-रात होता है।

इस प्रकार मुहूर्त तो काल की संज्ञा है। क्या यह किसी के ऊपर चढ़ सकता है, या किसी को खा सकता है, अथवा किसी को भस्म कर सकता है? कदापि नहीं। इतिहास बताता है कि इस प्रकार की आस्था से देश को समय-समय पर बहुत हानि उठानी पड़ी है। दिशा शूल का अर्थ है कि विशेष दिनों में विशेष दिशा की यात्रा करना उत्तम है और अमुक दिनों में अमुक दिशाओं में जाना हानिकारक है।

यदि विशेष दिन में दिशा विशेष नहीं जाना चाहिए तो उस दिशा में जाने वाली सभी मोटरें, कारें, ट्रक, रेलगाड़ियाँ और वायुयान बन्द कर देने चाहिए, परन्तु हम देखते हैं कि रेलें और मोटरें प्रतिदिन प्रत्येक दिशा में जाती हैं। यदि दिशा शूल का कोई प्रभाव होता तो उस दिन गाड़ियों की टक्कर होकर सारे यात्रियों की मृत्यु हो जानी चाहिए थी।

ईश्वर की बनाई हुई सृष्टि सबके लिए शुभ है। परमेश्वर ने अशुभ मानकर कोई रचना नहीं की। बारह महीने, प्रत्येक महीने की तिथियाँ, सप्ताह के सात वार सभी उस ईश्वर की व्यवस्था के अंतर्गत होने से शुभ हैं। पर यह कैसी बुद्धि है कि उन समय-विभागों को भी कुछ शुभ-अशुभ में बाँट दिया है।

आर्य समाज इस प्रकार के अंधविश्वास को नहीं मानता। आर्यसमाज की मान्यता है कि प्रत्येक विषय नया और शुभ सन्देश लेकर हमारे मध्य आता है।

नवग्रह:-किसी भी कार्य को आरम्भ करने पर नवग्रह पूजा को टकापन्थी पण्डित अनिवार्य बताते हैं। एक मिट्टी की डली पर कलावे के दो-तीन चक्कर लगा दिये जाते हैं। बार-बार टका चढ़वाकर ये लोग पर्याप्त राशि विघ्न दूर करने के नाम पर इकट्ठी कर लेते हैं। जड़ मिट्टी का ढेला तो अपनी रक्षा भी नहीं कर सकता, दूसरे के विघ्न क्या दूर करेगा?

ज्योतिषियों द्वारा स्वीकृत नवग्रह ये हैं-सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुद्ध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु। राहु और केतु वस्तुत: ग्रह नहीं है। ये दोनों चन्द्रमा के मार्ग की कल्पित ग्रन्थियाँ हैं। शेष सात में भी सूर्य और चन्द्रमा ग्रह नहीं हैं।

जिन मन्त्रों का पाठ नवग्रह पूजा में होता है, वे मन्त्र ही नवग्रह पूजा के नहीं है। अत: बुद्धिमानों को इस पाखण्ड से बचना चाहिए।

- क्रमश:

नवीन संवत्सर मंगलमय हो

– स्वामी मंगलतीर्थ

मुनयो मनीषिणस्तत्र सज्ज्ञान परिपुष्टये।
आययुर्दूरदेशेभ्यस्तथा निश्रित्य शोभनम्॥

ओ३म्-ओ३म् हमारे वर्ष का प्रारम्भ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से होता है। इसलिए इसको संवत्सर प्रतिपदा कहते हैं। 'ब्रह्मपुराण' में लिखा है कि ब्रह्मा ने आज के दिन ही सृष्टि की रचना प्रारम्भ की थी।

चैत्रमासि जगत् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रं तु तथा सूर्योदये सति॥

अर्थात् ''चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत् की रचना की।'' इसी दिन भगवान् के मत्स्यावतार का आविर्भाव हुआ था। सतयुग का प्रारम्भ इसी दिन हुआ था और भारतवर्ष के सार्वभौम सम्राट् विक्रमादित्य के संवत् का प्रथम दिन भी यही है।

नवीन संवत्सर का उत्सव प्रत्येक देश में मनाया जाता है। ईसाइयों में पहली जनवरी को 'न्यू इयर्स डे' का त्यौहार बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। फारस देश के निवाली पारसियों के यहां सूर्य के मेष राशि में प्रवेश करने के दिन 'जश्न-नौरोज' बड़ी धूमधाम से होता है। अन्य जातियों में भी इसी से मिलती-जुलती प्रथाएं हैं, इसलिए स्वराज्य प्राप्ति के बाद भारतवर्ष में इस प्रकार का सार्वजनिक उत्सव अवश्य मनाया जाना चाहिए। भारतवर्ष में केवल हिन्दू ही नहीं रहते, वरन् मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी, बौद्ध और भी अनेक मजहबों के व्यक्ति बड़ी संख्या में बसते हैं। हिन्दुओं के अन्य त्यौहारों में तो उनके विशेष धार्मिक विधान सम्पन्न किये जाते हैं, किसी न किसी देवता का पूजन होता है, तीर्थस्नान, दान, वेदपाठ आदि का भी नियम पालन करना होता है। परन्तु नवीन संवत्सर के उत्सव में कोई नियम अनिवार्य नहीं है। इसको प्रत्येक धर्म का व्यक्ति, जो अपने को भारतीय समझते हैं, अपनी-अपनी रूचि के अनुसार मना सकते हैं। हिन्दू अपने मन्दिरों में भगवान् की पूजा और वेदपाठ करके, मुसलमान भाई अपनी मस्जिदों में नमाज पढ़कर और कुरान का पाठ करके, ईसाई भाई अपने गिरजे में ईश प्रार्थना और बाइबिल सम्बन्धी प्रवचन सुनकर इसको मना सकते हैं। इसके संबंध में यह ऐतराज करना कि हिन्दू शास्त्रों में इसका निर्देश है, ठीक नहीं। जब हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी आदि सब कोई अंग्रेजी अमलदारी में बिना किसी ऐतराज के एक जनवरी को 'नववर्ष' की छुट्टी मना लेते थे और बहुत से नई रोशनी के व्यक्ति उसमें प्रत्यक्ष रूप से भाग भी लेते थे, तो कोई कारण नहीं जो हम चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को 'नये साल' का उत्सव मनाने में ऐतराज करें।

ओ३म् खेद का विषय है कि अनेक वर्षो से भारत वासियों में राष्ट्रीयता और एकता की भावना का अधिकांश में लोप हो गया है और उसका स्थान संकीर्णता ने ले लिया है। एक देश में अनेक धार्मिक विश्वासों का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। विशेषत: भारतवासी तो इस विषय में आरम्भ से ही सबसे अधिक उदार और अग्रसर रहे हैं। जहां ईसाई और मुसलमान देशों में धार्मिक विश्वासों में शंका और तर्क करने वालों को प्राणदण्ड दिया गया है, भारतवर्ष के धार्मिक क्षेत्र में घोर आस्तिक से घोर नास्तिक तक, अव्वल दर्जे की छुआछूत वाले से लेकर सरभंगी तक, पेड़ और सांपों की पूजा करने वालों से लेकर निराकार सर्वव्यापी ब्रह्म की उपासना करने वाले तक सभी लोगों के सदा स्थान मिला है। ईसाई मत को अब तक यूरोप में स्वीकार नहीं किया और जिस समय ईसाईयों पर अत्याचार जारी थे, उसी समय दक्षिण भारत के कोचीन, मालावार आदि प्रदेशों में उनका स्वागत बन्धुरूप में किया गया। जहां आज भी 1600 वर्ष से अधिक प्राचीन गिरजाघर मौजूद हैं। इसी प्रकार मुसलमान आक्रमणकारियों के आगमन से बहु पूर्व यहां इस्लाम मजहब वालों को भी भाई के समान स्थान दिया गया था।

ओ३म् सारांश यह है कि हिन्दू जाति धार्मिक विश्वासों के सम्बन्ध में सदा से उदार रही है और उसका यह सिद्धान्त रहा है कि मानव प्रकृति के विकास को देखते हुए भिन्न-भिन्न दर्जे के मनुष्यों के लिए पृथक-पृथक पूजा और उपासना की विधि होना

असंगत नहीं वरन् स्वाभाविक ही है। गांव का एक साधारण किसान भगवान् की मूर्ति पर दो-चार फूल चढ़ाकर और टूटी-फूटी भाषा में ही स्तुति करके शान्ति पा सकता है, जबकि एक योगी या संन्यासी को निर्विकल्प समाधि ही मुक्ति का मार्ग जान पड़ती है। इसी प्रकार वह सभ मजहबों को भी भिन्न-भिन्न रूचियों के मनुष्यों को उचित मानता है। इन्हीं उच्च आदर्श विचारों के कारण भारतवर्ष पहले 'मानव द्वीप' के नाम से जाना जाता था। यहां मानवता को ही महत्त्व दिया जाता रहा है। अस्तु।

ऐसी दशा में हमको कोई कारण नहीं जान पड़ता कि इस देश के निवासी धार्मिक मत-मतान्तरों के आधार पर आपस में अनैक्य रखें। ओ३म हमारा कर्त्तव्य है कि कुछ समय से अज्ञानवश लोगों में जो संकीर्णता का भाव उत्पन्न हो गया है, उसे मिटाने के लिए सार्वजनिक त्यौहारों और उत्सवों की योजना करें। जैसे 26 जनवरी और 15 अगस्त के उत्सव राष्ट्र भर के लिए माननीय समझे जाते हैं और सब कोई उनमें बिना भेदभाव के भाग लेते हैं, उसी प्रकार नव वर्षोरम्भ का उत्सव हमको ऐसे रूप में मानना चाहिए, जिससे वह किसी एक जाति या सम्प्रदाय का न रहकर सार्वजनिक जान पड़े। वैसे हिनदू मात्र उस दिन को नवरात्रि का प्रथम दिन होने के कारण मनाते ही हैं। उस दिन उपवास रखकर हवन आदि कृत्य करते हैं और अनेक इसका कोई महत्त्व भी अनुभव नहीं करते। इसलिए अब यदि भारतीय नववर्ष के उत्सव का प्रचार एक सार्वजनिक त्यौहार के रूप में किया जाए तो उससे विविध सम्प्रदायों एवं मत-मतान्तरों के समन्वय में उल्लेखनीय सहायता मिल सकती है। आज सुखशान्ति आनन्द पाने के लिए हर क्षेत्र में समन्वय की आवश्यकता महसूस हो रही है।

भारतीय नरेश विक्रमादित्य की कीर्ति को स्थायी और समुज्जवल बनाने में सहयोग दें। यह प्रतिपदा सब पापों को नष्ट करने वाली, आयु को बढ़ाने वाली और सौभाग्यदायिनी है।

राष्ट्र और समाज की सर्वांगीण विकास के लिए देश में बसने वाले विभिन्न समुदायों और सम्प्रदायों का समन्वय और पारस्परिक सद्भावना अनिवार्य है। जहाँ के निवासी आपस में वैमनसय अथवा उदासीनता का भाव रखने वाले होंगे, वह समाज कभी सुदृढ़ और शक्तिशाली न होगा। नवीन संवत्सर का त्यौहार देश के सभी वर्गों और सम्प्रदायों को एक संगठन के सूत्र में आबद्ध करने वाला है। अतः एवं इसका समारोह पूर्वक मनाना प्रत्येक भारतवासी का पवित्र कर्त्तव्य है। नवीन वर्ष मंगलमय हो। सभी को सुख शान्ति आनन्द मिले। यही शुभकामना है हमारी।

- ओ३म् शान्ति ओ३म्

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं—

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! —व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

हमारी महान विभूति-पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी

- शिवनारायण उपाध्याय

पण्डित गुरुदत्त का जन्म 26 अप्रैल 1864 ई. को मुल्तान नगर (पाकिस्तान) में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। आप अपने माता-पिता की सबसे छोटी संतान थी और बालकपन में आपको मूला नाम से पुकारा जाता था। कुल गुरु ने इन्हें 'बैरागी' कहकर पुकारा 12 वर्ष की आयु तक इन्हें वैरागी कहकर ही पुकारा जाता रहा। जब 12 वर्ष की आयु में माता-पिता के साथ हरिद्वार गये तो वहां गोस्वामी राधेलाल ने इन्हें 'गंगादित्ता'' नाम दिया। पंजाब में गुरु के आशीर्वाद से उत्पन्न बालक को गुरुदित्ता कहा जाता था। इसलिए बाद में इन्हें गुरूदित्ता के स्थान पर गुरुदत्त कहने लगे। पढ़ने में यह अत्यन्त मेधावी रहे थे। ये लाखों तक की संख्याओं का गुणा-भाग जोड़ बाकी सब मौखिक ही कर देते थे। पिता श्री रामकृष्ण ने आठ वर्ष की आयु में झंग के राजकीय विद्यांलय में प्रविष्ठ कराया। उन दिनों शिक्षा का माध्यम उर्दू, फारसी था। गुरुदत्त दोनों ही भाषाओं में इतने प्रवीण थे कि उर्दू और फारसी का अनुवाद एक दूसरे में तुरन्त कर देते थे। ये आशु कवि भी थे। झंग से मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण होकर ये मुल्तान के हाई स्कूल में भर्ती हो गये। विद्यालय में अध्ययन करते समय ही इन्होंने विद्यालय के पुस्तकालय कि सब पुस्तकें पढ़ डाली इससे इनके विचारों में परिवर्तन आया। मेहता जैमिनी, जो इनके निकट रहे थे। उनका कहना था कि आर्य समाज के सभासद् होने के नाते गुरुदत्त नास्तिक तो नहीं थे परन्तु उनके हृदय में ईश्वर की सत्ता के सम्बन्ध में संशय बना रहता था। लाला चेतनानन्द और पण्डित रेमलदास इनके घनिष्ठ मित्र थे। इन्हीं की प्रेरणा से इन्होंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा। 20 जून 1880 के दिन ये आर्य समाज के सदस्यं बने इसके तुरन्त बाद ही अष्टाध्यायी का अध्ययन पण्डित अक्षयानन्द से करने लगे। परन्तु पण्डित अक्षयानन्द उन्हें संतुष्ट नहीं कर सके। 10वीं कक्षा की परीक्षा में गुरुदत्त ने पंजाब भर में पांचवा स्थान प्राप्त किया था। जनवरी 1881 को इन्होंने लाहौर के राजकीय महाविद्यालय में प्रवेश किया। डॉ. लाइटनर तब महाविद्यालय के प्राचार्य थे। महाविद्यालय में उनके सहपाठी महात्मा हंसराज लालालाजपतराय, दिवान नरेन्द्रनाथ, लाल रूचिराम आदि महानुभाव थे। ये सभी आगे चलकर समाज में आदरणीय नेता बने। सन् 1881 के अन्त अथवा 1882 के प्रारम्भ में आपने एक संस्था स्थापित की तथा उसका नाम Free Debating Society रखा। इस संस्था में सभी धर्मो और विचारों के व्यक्तित्व भाग ले सकते थे। इसमें धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक, नैतिक एवं राजनैतिक विषयों में वाद-विवाद होते रहते थे। पं. गुरुदत्त इस संस्था के सर्वसम्मति से चुने हुए मन्त्री बने थे। लाला लाजपतराय ने लिखा है कि इन युवकों ने अपना समय एवम् शक्ति रचनात्मक कार्यो में लगा दी, इसका इनके जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। ये सभी लोग समाज में उच्च पदों पर पहुँचे। लाला लाजपतराय इनसे बड़े प्रभावित हुए और 2 दिसम्बर 1882 को लाहौर आर्य समाज के सदस्य बन गये। महाविद्यालय में पढ़ते समय ही इन्होंने हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार आन्दोलन में भाग लिया। पढ़ते समय ही महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय तथा पं. गुरुदत्त ने मिलकर एक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया तथा उसको अंग्रेजी और उदू भाषाओं में प्रकाशित किया। समाज के कार्य भी ये लोग किया करते थे। फिर भी ये पंजाब विश्वविद्यालय की बी.ए. की परीक्षा सन् 1885 में गुरुदत्त प्रथम तथा महात्मा हंसराज दूसरे स्थान पर रहे। सन् 1886 में एम.ए. की परीक्षा दी और सारे विश्वविद्यालय में प्रथम रहे। उनका विषय भौतिकी था। इसी काल में ये पंजाब भर में आर्य समाज के उत्सवों में भी जाते रहते थे। 12 अक्टूबर 1887 ई. को लाहौर के डिप्टी कमिशनर ने इन्हें पत्र लिखकर बुलाया और कहा कि एकस्ट्रा असिस्टेन्ट कमिशनर के पद के लिए फार्म भरें परन्तु गुरुदत्त ने इसे अस्वीकार कर दिया। सन् 1887 ई. में मिस्टर ओमन के अवकाश पर जाने पर उनके स्थान पर विद्यालय के प्राध्यापक नियुक्त किये गये। इन्होंने प्राध्यापक के रूप में अपनी धाक जमा दी।

इसके समस्त छात्र उत्तीर्ण हुए। छात्र गुरुदत्त पर गर्व करते थे। तब गुरुदत्त पंजाब के सबसे बड़े वैज्ञानिक माने जाते थे। स्वामी दयानन्द की मृत्यु के समय ये अजमेर में थे और उनके अन्तिम प्रयाण को देखकर पूर्ण ईश्वर विश्वासी बन गये। वहां से लाहौर पहुंचकर आर्य पुरुषों की एक सभा हुई। सभा में पण्डित गुरुदत्त का प्रस्ताव था कि स्वामी दयानन्द की यादगार में यहां भी डी.ए.वी. संस्था प्रारम्भ की जावे, स्वीकार हुआ और सभा में आठ हजार

रूपये का दान प्राप्त हो गया। जो आज की दृष्टि से 16 लाख से कम नहीं माना जा सकता। 18 फरवरी 1884 रविवार के दिन आर्य समाज मन्दिर में भीड़ इकट्ठी हो गई। महात्मा हंसराज ने भी इस कार्य के लिए अपने को समर्पित कर दिया। पण्डित गुरुदत्त कुछ समय तक डी.ए. वी. प्रबन्धक समिति के मन्त्री बन गये। पण्डित गुरुदत ने अपना समय डी.ए.वी के लिए अर्थ संग्रह करने में लगा दिया। आर्य समाज के वार्षिकोत्सवों पर डी.ए.वी. के लिए दान देने की अपील की जाती थी। उसमें मुख्य वक्ता के स्थान पर पं. गुरुदत्त का नाम होता था। एक बार वे स्वामी अच्युतानन्द के साथ बैठे थे, रात्रि के 12 बजे गये थे। घर से माताजी का सन्देश आया कि तुम्हारा पुत्र बहुत रूग्ण है, तुरन्त आओ। पं. गुरुदत्त का उत्तर था, लड़का कब बड़ा होगा, कब विद्या प्राप्त करेगा, उसे योग्य बनाने में कितना प्रयत्न करना पड़ेगा? फिर भी क्या पता कि वह देश की सेवा करेगा? यदि ये पढ़े लिखे संन्यासी देश की दुर्दशा को अनुभव कर लें तो समाज का अधिक हित होगा।

फिर 1887 ई. में कॉलेज के लिए धन संग्रह हेतु उत्तर प्रदेश की ओर निकल पड़े। साथ में लाला लाजपत राय, लाला द्वारिकादास, लाला ज्वाला सहाय सहाय आदि भी साथ थे, इधर मुलतान में पिता बहुत रूग्ण थे तो प्रति दिन तार करके उनके समाचार पूछते रहते थे। उत्तर प्रदेश से आये और फिर पिता की स्वीकृति लेकर निकल पड़े। लाहौर में उन्हें पिता की मृत्यु का तार मिला तो घर पर तार से सूचना दी कि मेरे आने तक शव को सुरक्षित रखा जावे और वहीं से सब सम्बन्धियों को पिता की मृत्यु सम्बन्धी तार भेज दिये। पिता की अन्त्येष्ठि पूर्ण वैदिक विधान के अनुसार की। जाति वालों ने बहिष्कार की धमकी भी दी परन्तु वे निडर होकर अपना कार्य करते रहे।

फिर तो इन्होंने अपना समग्र जीवन आर्य समाज को ही अर्पण कर दिया। गांव-गांव घूमकर आर्य समाज का प्रचार किया। जहाँ भी पण्डित गुरुदत्त के व्याख्यान होते थे भीड़ इतनी हो जाती थी। कि पैर रखने को भी जगह नहीं मिलती थी। वे इतने लोकप्रिय हो गये थे कि प्रात: काल से लेकर रात्रि को 12 बजे तक लोगों से घिरे रहते थे। उनको नित्यकर्म के लिए भी समय नहीं मिलता था। समय पर न भोजन ले पाते थे और न शौच, स्नान आदि से निवृत्त हो सकते थे। फलस्वरूप राज रोग टीबी ने इन्हें आ घेरा। फिर भी इन्होंने समाज के कार्य से अपने को अलग नहीं किया फलस्वरूप 19 मार्च 1890 में केवल 26 वर्ष की आयु में इस नश्वर शरीर को त्यागना पड़ा। गुरुदत्त यद्यपि जाति से अरोड़ा थे परन्तु उन्होंने संस्कृत में इतनी योग्यता प्राप्त कर ली थी कि वे संस्कृत में धारा प्रवाह व्याख्यान दे सकते थे। साथ ही उन्होंने शास्त्रों का गहन अध्ययन भी कर लिया था। फलस्वरूप लोग उन्हें पण्डित जी कहने लग गये थे। वे शास्त्रों पर सनातनी विद्वानों से शास्त्रार्थ भी करने लग गये थे। एक बार केशवानन्द नामक एक साधु अपने (40) शिष्यों सहित लाहौर आया। पं. गुरुदत्त ने उसे आर्य समाज से संस्कृत में शास्त्रार्थ का नोटिस दिया। लगातार चार सप्ताह तक नोटिस दिया जाता रहा उसने कई पण्डित भेजें परन्तु सब पराजित होकर चले गये। फिर मौनी बाबा से शास्त्रार्थ हुआ। मौनी बाबा ने कहा कि यह संसार मिथ्या है। पं. गुरुदत्त ने उत्तर में कहा आप भी जगत् में ही है इस कारण आप और आपका कथन दोनों मिथ्या है। हम तो संसार को सत्य मानते हैं, हमारा ईश्वर भी सत्य है, ईश्वर का ज्ञान वेद भी सत्य है स्वामी जी कोई उत्तर नहीं दे सके और आर्य समाज विजयी रहा। पं. भगवत्दत्त का कहना था कि आर्य समाज में पण्डित गुरुदत्त का स्वाध्याय सबसे अधिक था। महात्मा हंसराज ने एक बार कहा था आप पण्डित गुरुदत्त को देखें। उन्होंने अष्टाध्यायी पढ़ी भी और दूसरों को पढ़ाई भी, वह एक महान् युग था। लोग कार्यालयों में कार्य करते थे और संस्कृत भी पढ़ते थे ओर आर्य समाज का कार्य भी करते थे। सामाजिक कार्यो में अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी आपने अंग्रेजी में Window of Rishis, तथा उपनिषदों का भाष्य किया। उनके द्वारा लिखित पुस्तकें पृष्ठ संख्या में तो अधिक नहीं है परन्तु उनमें स्थायी महत्व का ज्ञान है। पुस्तकों का नाम है-

The terminalogy of vedas, Criticism on monier, Wiillians Indian Wisdom, Evidences of Human Spirit, Vedic Texts r, s, t, Realities of Inner Life. Pecuniomania (धन का पागलपन) Reply to Mr. T. Williams letter on, Idotatory in the Vedas, Mr. Pincoton Un Vedas.

अमृतसर की खूनी बैसाखी से क्षुब्ध हुए अमर शहीदों का बलिदान

– रामबिहारी विश्वकर्मा

अंग्रेज हमारे देश में व्यापारी के रूप में आये और भारत की जनता ने 'अतिथि देवो भव' की परम्परा के अनुसार इन व्यापारियों को सब प्रकार की सुविधाएं दीं। लेकिन धीरे-धीरे इन व्यापारियों ने देश में फूट डालकर उसके टुकड़े-टुकड़े करके अपना कब्जा जमा लिया। 1857 में भारतीय सिपाही ने पहली बार विद्रोह करके भारत माँ को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया लेकिन वे विफल रहे। महाराष्ट्र में वासुदेव बलवन्त फड़के ने 1873 में युवा समाज का संगठन शुरु किया। जगह-जगह व्यायामशालाएं खोलीं। इस क्रान्तिकारी को राजद्रोह के आरोप में आजीवन कारावास की सजा दी गई लेकिन युवकों ने खासतौर पर गरमपंथी विचारधारा वाले युवकों ने यह निश्चय कर लिया कि इस देश को आजादी भीख मांगने से नहीं मिलेगी। उनका दृढ़ विचार था कि स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम लेकर रहेंगे।

भारत में अंग्रेजों ने तथाकथित शासन सुधार लाने के लिए लार्ड साइनम की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया था। यह कमीशन 3 फरवरी, 1928 को जब भारत पहुंचा तो पूरे देश में हड़ताल रखी गई। और जगह-जगह ''साईमन गो बैक'' के नारे लगाये गये। लाहौर में नौजवान भारत सभा के सदस्यों ने भी नारे लगाने की योजना बनाई। तत्कालीन पुलिस अधीक्षक स्काट ने असिस्टेंट सान्डर्स को रास्ता साफ करने की जिम्मेदारी सौंपी। लाहौर में लाला लाजपतराय और नौजवानों की टोली पर सान्डर्स ने लाठी बरसायी। लाला लाजपतराय को इतनी चोट लगी कि कुछ दिनों पश्चात् चोट के कारण उनकी मृत्यु हो गई। भगतसिंह ने इस दु:खद घटना पर प्रस्ताव रखा कि लाला जी पर जो लाठियां बरसाई गयी हैं। उसी के कारण उनकी मृत्यु हुई है। इससे समूचे राष्ट्र का अपमान हुआ है। और नौजवान भारत सभा इस अपमान का बदला लेकर रहेगी। उन्होंने लाठी चलाने वाले पुलिस सुपरिटेंडेंट स्काट को गोली का निशाना बनाने का निश्चय किया। लाला लाजपतराय की मृत्यु के एक महीने के बाद चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु और जयगोपाल ने पुलिस स्टेशन के सामने सान्डर्स को गोलियों से भून डाला। वे मारना तो चाहते थे स्काट को जिसने सान्डर्स को लाठी चार्ज का आदेश दिया था। लेकिन दोनों का आकार-प्रकार ऐसा था कि पहचानने में कुछ भूल हो गई और भ्रमवश उन्होंने सान्डर्स को मार डाला। इस तरह उन्होंने लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला ले लिया। इन जवानों ने भारत माँ की बेड़ियां काटने के लिए अपने पैरों में बेड़ियाँ डाल ली।

23 वर्ष की उम्र में भगत सिंह एक युगपुरुष बन गये थे। अपने खून से उन्होंने स्वतन्त्रता के जिस पौधे को सींचा वह विशाल वृक्ष बन गया। भगत सिंह को वीरता का यह सबक पुश्तैनी तौर पर प्राप्त हुआ था। एक बार जब वे छोटे थे और छोटे-छोटे तिनके जमीन में गाड़ रहे थे तो उनके पिता सरदार किशन सिंह ने पूछा कि बेटे तुम क्या कर रहे हो तो तुतलाती आवाज में भगत सिंह ने कहा कि यानि बंदूके बो रहा हूँ। उनका परिवार पिछली दो पीढ़ियों से विदेशी सरकार के खिलाफ संघर्ष कर रहा था। ऐसे परिवार में भगतसिंह जैसे क्रांतिकारी विचारों वाले बालक का जन्म लेना स्वाभाविक ही था। भगत सिंह 10-11 साल की उम्र में ही बहुत ही चिन्तनशील हो गये थे। 1919 में 13 अप्रैल को बैसाखी के दिन अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक सभा में करीब 20 हजार स्त्री-पुरुष, बच्चे इकट्ठे हुए थे। इसी बीच लैफ्टिनेंट सर ओडायर ने 100 हिन्दुस्तानी और 40 अंग्रेज सिपाहियों के साथ वहां प्रवेश किया। करीब 16 सौ राउण्ड फायर किये गये, जलियांवाला बाग में लाशें पट गईं। उस समय भगतसिंह 12 वर्ष के थे। वह पढ़ने गये थे, लेकिन वह दृश्य देखकर उन्होंने खून से भीगी मिट्टी उठाई और माथे से लगाकर उसे एक छोटी सी शीशी में भर लिया। घर पहुंचने पर अपनी बहन को वह शीशी दिखाई और शीशी के चारों ओर फूल रखकर सिर झुकाया। 14 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और स्वतन्त्रता के आन्दोलन में कूद पड़े। उनके अन्दर अद्भुत संगठन शक्ति तो थी

ही, व्यवहार कुशल भी थे। इसी बीच 5 फरवरी 1922 को गोरखपुर के चौरी चौरा स्थान पर लोगों की भीड़ ने थानेदार और सिपाहियों को थाने में बन्द करके आग लगा दी। क्रान्तिकारियों के मन में यह निश्चय हो गया कि अंग्रेजों के कान बहरे हो चुके हैं। वे शान्ति की भाषा सुन नहीं पाते। बहरों को सुनाने के लिए ऊची आवाज की जरूरत होती है इसीलिए उन्होंने अंग्रेजों का ध्यान आकर्षित करने के लिए और उनके बहरे कानों में सुनाई देने लायक आवाज बुलन्द करने का निश्चय किया। उन्होंने एसेम्बली में बम फेंकने की योजना बनाई। एसेम्बली में 8 अप्रैल 1929 को वायसराय के फैसले की घोषणा की जाने वाली थी। भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त खाकी कमीज और नेकर पहनकर वहां पहुंच गये। उन्होंने अखबार में लिपटा हुआ बम सरकारी बेंचों के पीछे खाली जगह पर फेंक दिया। उसके बाद दूसरा बम भी फेंका। उन्होंने पिस्तौल से दो गोलियां भी छोड़ी। दोनों वहां खड़े रहे और नारा लगाया इन्कलाब जिन्दाबाद दूसरा नारा गूंजा साम्राज्यवाद का नाश हो। उन्होंने एसेम्बली में पर्चे भी फेंके जिस पर अंग्रेजी में लिखा हुआ था, बहरों को सुनाने के लिए ऊँची आवाज की जरूरत होती है। बम फेंकने के बाद भगत सिंह तथा बूटुकेश्वर दत्त आसानी से भाग कर बच सकते थे मगर वे शांत चुपचाप खड़े रहे। पुलिस जब उन्हें कोतवाली ले जाने लगी तो उन्होंने फिर नारा लगाया, 'इन्कलाब जिन्दाबाद' दूसरा नारा गूंजा 'साम्राज्यवाद का नाश हो।' भगत सिंह केवल क्रान्तिकारी ही नहीं थे वे अध्ययनशील और दार्शनिक विचारों वाले व्यक्ति थे। उनसे जब न्यायालय में पूछा गया कि क्रान्ति से आपका आशय क्या है? तो उन्होंने कहा, क्रान्ति से हमारा प्रयोजन है अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन। उन्होंने आगे कहां पूंजीपति, शोषक और समाज पर घुन की तरह जीने वाले लोग करोड़ो रूपयो पानी की तरह बहाते हैं। वहीं दूसरी ओर शानदार महलों का निर्माण करने वाले गंदी बस्तियों में रहते हैं। ऐसा समाज किस काम का? इसे बदलना होगा। भगत सिंह ने न्यायालय के समक्ष नई सामाजिक व्यवस्था की जो रूपरेखा दी वह बड़े-बड़े दार्शनिकों को भी सोचने के लिए बाध्य करती है कि इतनी कम उम्र में इस व्यक्ति ने गहन चिन्तन-मनन का समय भला कब निकाला होगा?

असेम्बली में विस्फोट के मूल में उद्देश्य अपने क्रान्तिकारी विचारों को लोगों तक पहुंचाना था। उनके वक्तव्य उस समय के प्रचलित अखबारों में प्रकाशित हुए, उनकी नई विचार पद्धति के साथ जोशीली भाषा और कष्ट झेलने के लिए आगे बढ़ना, यह देखकर सारा देश उनके प्रति आकृष्ट हुआ। उन्होंने कहा था कि हम ये जानते हैं कि पिस्तौल और बम इंकलाब नहीं लाते। इंकलाब की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है, हमने बम का धमाका करके यही प्रकट करना चाहा है। हमारे इंकलाब का अर्थ पूंजीवाद और पूंजीवादी युद्धों के कष्टों को समाप्त करना है। उन्होंने न्यायधीश के सामने स्पष्ट किया कि अगर बम फेंकने वालों का सही दिमाग न होता तो वे खाली जगहों की बजाय बेचों पर बम फेंकते, लेकिन उन्होंने सही जगह चुनने की जो हिम्मत दिखाई है, उसके लिए उन्हें ईनाम मिलना चाहिए। 12 जून 1921 को हुए असेम्बली बम कांड के मुकदमें में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास दिया गया। भगत सिंह जेल से ही अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए जनक्रान्ति करते रहे।

लम्बी भूख हड़ताल की। भगतसिंह ने कहा कि हम इस शर्त पर भूख हड़ताल तोड़ेंगे कि हम सबको एक साथ रहने का मौका दिया जाये। जेल अधिकारियों ने उनकी बात मान ली और उन्हें दाल और फुल्का दिया गया। उस समय भी उन्होंने अपनी जिद मनवाई। आजादी के इन दीवानों को देखने के लिए देश भर से लोग पेशी के दिन अदालत में जाते थे और वहां 'वन्देमातरम्' और 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारों से आसमान गूंज उठता था।

लाहौर जेल में ही बटुकेश्वर दत्त, अजय घोष, जितेन्द्र सान्याल, यतीन्द्र नाथ दास भी रखे गये थे। इसी बीच सान्डर्स हत्याकाण्ड का मुकदमा भी 10 जुलाई 1929 से शुरु हुआ। भगत सिंह को हथकड़ी लगाने की जब बात हुई तो उन्होंने कहा कि एक क्रान्तिकारी को पुलिस के सिपाही के साथ हाथ बांध कर ले जाया जाये ये न्याय के खिलाफ है और उन्होंने भूख हड़ताल कर दी। न्यायाधीश जब कुर्सी पर बैठते थे तो चारों ओर नारे और राष्ट्रीय गीत गूंजने लगता था, 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।

देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है। वक्त आने पर बता देंगे तुझे ऐ आसमां। हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है।''

जिस समय मृत्यु की भयानक काली छाया मंडरा रही थी, उस समय भी आजादी के इन दीवानों की हंसी और अट्हास गूंजता रहता था। भगत सिंह कई बार ऐसा व्यंग्य छेड़ते थे या कोई ऐसी पेंचीदा सवाल उठा देते थे कि मजिस्ट्रेट भी चकरा जाते थे। मुकदमें की कार्यवाही 3 महीने तक चलती रही और दुनिया भर के मुकदमों के इतिहास में शायद लौहार षंडयंत्र केस ही ऐसा है जिसमें फैसला उस दिन सुनाया गया जिस दिन न अभियुक्त अदालत में हाजिर थे, न गवाह और न वकील। अदालत ने खुद आरोप लगाया और खुद ही फैसला दिया। फैसले में भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी की सजा सुनाई गई, 7 को कालेपानी की सजा, एक को सात वर्ष की सजा और एक को तीन वर्ष की सजा दी गई। भगत सिंह को मृत्यु से तनिक भी भय न था, उन्हें न तो व्यक्तिगत चिन्ता थी और न कोई दु:ख था।

भगतसिंह जेल में अध्ययन करते रहते थे। हर पत्र में वे पुस्तकों की ही मांग करते थे। पुस्तकों के साथ-साथ वह यहां तक लिख देते थे, कि पुस्तकालय के रजिस्टर में उस पुस्तक का कितना नम्बर है। उन्होंने चार्ल्स डिकेन्स, रीड मेम्सबेनी, गोर्की, मार्क्स, उमर खैयाम, आस्कर वाइल्ड, जार्ज बनार्ड और लेनिन आदि का गहन अध्ययन किया था। जब वे अपनी कोठरी में इधर से उधर घूमते थे तो कभी-कभी पुस्तकें छोड़कर मधुर स्वर में गा उठते थे, ''मां मेरा रंग दे बसन्ती चोला। इसी रंग में रंग के शिवा ने माँ का बंधन खोला।'' उन्हें राष्ट्र और राष्ट्रवासियों की इतनी चिन्ता थी कि उसके सामने अपने कष्टों का कुछ ध्यान ही नहीं था, जेल में ही उन्होंने 'आत्मकथा, मौत के दरवाजे पर, समाजवाद का आदर्श और स्वाधीनता की लड़ाई में पंजाब का पहला उभार जैसी पुस्तकें लिखीं। कुछ पुस्तकें तो छप गई लेकिन कुछ नहीं छप पाई। जेल में जब कोई मिलने आता था तो कभी-कभी वह कहते थे अगर मैं इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा देश के कोने-कोने तक पहुंचा सका तो समझूंगा कि मेरे जीवन का मूल्य मिल गया। उन्होंने जेल से युवकों के नाम सन्देश भेजा था जिसमें अपनी राजनीतिक विचारधारा को स्पष्ट किया था। उन्होंने अपने बारे में कहा था, यह बात प्रसिद्ध की गई है कि मैं आतंकवादी हूँ परन्तु मैं आतंकवादी नहीं हूँ, मैं एक क्रान्तिकारी हूँ जिसके कुछ निश्चित विचार-आदर्श और लम्बा कार्यक्रम हैं मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम बम और पिस्तौल से कोई लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। हमारा मुख्य लक्ष्य यह है कि मजदूरों और किसानों का संगठन हो।'' भगतसिंह के बलिदान का क्षण ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहा था, वह प्रसन्नता और उत्सुकता के साथ उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने छोटे भाई कुलतार सिंह को लिखे पत्र में उन्होंने कहा था-''फिर जन्म लूँ और मातृभूमि की और सेवा कर सकूँ'' मृत्यु के प्रति उनकी निर्भीकता को देखकर लगता था कि जैसे वह इंसान नहीं फरिश्ता है। जब उनसे कहा गया कि आखिरी वक्त अपने वाहे गुरु का नाम ले लो और 'गुरुवाणी' का पाठ कर लो तो भगतसिंह ने कहा, ''आखिरी वक्त आ गया है, मैं परमात्मा को याद करूँ तो वह कहेंगे कि यह बुजदिल है, तमाम उम्र तो इसने मुझे याद नहीं किया और मौत सामने नजर आने लगती है तो मुझे याद करने लगा है। लोग यही कहेंगे कि आखिरी वक्त मौत को सामने देखकर इसके पांव लड़खड़ाने लगे।'' जब फांसी की सजा दी गई तो भगतसिंह बीच में थे, अगल-बगल सुखदेव और राजगुरु थे। तीनों मिलकर साथ-साथ गाते हुए चलने लगे, दिल से निकलेगी ना मर कर भी वतन की उल्फत, मेरी मिट्टी से भी खुशबुए वतन आयेगी।

भगत सिंह ने मजिस्ट्रेट को देखकर कहा था 'आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपको देखने को नसीब हो रहा है कि भारत के क्रान्तिकारी किस तरह खुशी-खुशी अपने उच्च आदर्शो के लिए मौत को गले लगाते हैं।' उनके पैरों पर न कंपकंपी थी, न चेहरे पर घबराहट। फांसी का फंदा पकड़कर उसे चूम कर तीनों ने एक साथ गर्जना की, ''इन्कलाब जिन्दाबाद'' साम्राज्यवाद मुर्दाबाद। उस समय शाम के सात बजकर 30 मिनट हुये थे। इन तीनों क्रान्तिकारियों को समूचा देश उनकी निर्भीकता और राष्ट्रवाद की अदम्य भावना के लिए सदैव याद रखेगा।

शहीदे आजम पण्डित श्री लेखराम जी आर्य मुसाफिर तुम्हें शत्-शत् नमन

(गतांक से आग)

-कन्हैयालाल आर्य, ट्रस्ट उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

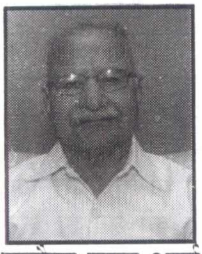

कन्हैया लाल आर्य

आर्य समाजों में प्रचार की धूम मचा दी- पं. लेखराम जी अपने समय के सबसे बड़े वैदिक प्रचारक थे और आर्य समाज पेशावर को इस बात का श्रेय एवम् गौरव प्राप्त है कि पं. जी ने आर्य समाज के लिए प्रचार आर्य समाज पेशावर से ही प्रारम्भ किया। सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देने के पश्चात पं. जी ने आर्य समाज रावलपिण्डी के वार्षिकोत्सव में भाग लिया। रावपिण्डी से पं. जी आर्य समाज गुरदासपुर पहुंचे। यह आर्य समाज स्वयं ऋषि दयानन्द जी ने स्थापित की थी। पं. जी ने यहां सात दिन तक महत्वपूर्ण व्याख्यान दिये और मिर्जा गुलाम मुहम्मद कादियानी को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। मिर्जा जी तो आये नहीं किन्तु पं. जी ने विशाल जन समूह के सामने मिर्जा जी के आक्षेपों का उत्तर दिया और लोगों की भ्रान्तियां दूर की। गुरदास पुर से पं. लाहौर लौट गये और उपदेशों एवं व्याख्यानों के साथ संस्कृत का गहन अध्ययन करने लगे। ऋषि दयानन्द जी अकाल मृत्यु के कारण पं. जी का आर्यसमाज के प्रति उत्तरदायित्व बहुत विशाल हो गया था।

जहां विपत्ति आई वहां पहुंचा- (1) राजस्थान ने पुकारा वहां जाकर बांदी कुई में विधर्मी बन चुके बन्धु की रक्षा की। (2) जम्मू ने पुकार की तो वहां पहुंचे। (3) घासीपुर (उत्तर पद्रेश) में जाना पड़ा तो वहां पहुँचे। (4) सिंध ने पुकारा तो वहां जाकर मोर्चा लगाया। (5) मुंशी इन्द्रमाणी के भांजे को मुरादाबाद में शुद्ध करने का श्रेय हमारे प्यारे बलिदानी लेखराम जी को प्राप्त है। (6) पसरूर जिला स्यालकोट में शास्त्रार्थ करके हकीम दुनीचन्द्र को विधर्मी होने से बचाया। (7) हरिद्वार में कुम्भ के मेले पर गये तो वहां पादरियों का जाल तार-तार कर दिया।

प्रचार वेद का करते थे अपना नहीं- आर्य समाज में यात्रा वृतान्त लिखने वाले प्रथम विद्वान, नेता, सम्पादक पण्डित जी ही थे। वे अपनी यात्रा वृतान्त पत्रों में देते रहते थे। अपने निजी प्रसार से वे कोसों दूर रहते थे। ट्रलरों के प्रवचन, व्याख्यान का सार पहले देते थे, अपने भाषण का सारांश बाद में देते थे। यही उनकी प्रमुख विशेषता थी।

मिर्जा गुलाम अहमदे को चुनौती- मिर्जा गुलाम अहमद कादियां ने अपने आप को खुदा का पैगम्बर घोषित कर दिया तथा अपने मत की पुष्टि के लिए यह भी घोषणा कर दी कि कोई भी अन्य मातावलम्बी एक वर्ष तक कादियां में रहे, तो मैं उसे खुदा का चमत्कार दिखा दूंगा, नहीं तो 200 रूपये प्रति मास की दर से 2400 रूपये दूंगा। विज्ञापन पढ़कर पं. जी कादियां पहुंच गये और उसे शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दे दी। परन्तु मिर्जा ने कहा कि मैं किसी ऐरै गैरे से शर्त नहीं लगाता। पं. जी ने कहा कि मैं 2400 रूपये कमाने के उद्देश्य से यहां नहीं आया हूं। कितनी ही बार पं. जी उसे शास्त्रार्थ की चुनौती दी परन्तु मिर्जा न तो कोई चमत्कार दिखा सका और न ही शास्त्रार्थ के लिए सामने आया, परन्तु पं. जी ने मिर्जा गुलाम अहमद की पुस्तकों को उत्तर देने में देर नहीं लगाई। पं. जी. के बार-बार पत्र लिखने पर मिर्जा ने उन्हें लिखा ''कादियाँ कोई दूर तो है नहीं, आकर मुलाकात कर लो। पत्र मिलते ही पं. जी कादियां पहुंच गये। स्वामी श्रद्धानन्द जी लिखते है, जिस चालबाज बाघ के पास जाने से बड़े-बड़े मतवादी डरते थे, पं. जी निडर होकर उसके पास उसके ही मकान में 'दस्त पज्जा' लेने के लिए पहुंच गये। पं. जी पूरे दो महीने कादियां रहे और उसे 6 बार शास्क्षार्थ करके निरूतर कर दिया। उन्होंने वहां अपने व्याख्यानों द्वारा भोली-भाली जनता को मिर्जा के हाथों गुमराह होने से बचाया और कादियां में आर्य समाज की स्थापना भी की। कादियां से प्रस्थान और मिर्जा की बौखलाहट पं. लेखराम जी ने दो महीने तक कादियां में रहकर हिन्दू भाईयों को मिर्जा की चालों से बचाया तथा मिर्जा की नाक में दम

कर दिया। ज्यों ही पं. जी कादियां से बाहर गये तो मिर्जा ने 2 दिसम्बर 1885 को विष्णु दास को धमकी दी कि वह इस्लाम मत को स्वीकार कर ले अन्यथा वह मर जायेगा। इस बात को जैसे ही पं. जी को सूचना मिली, पं. जी. 4 दिसम्बर को ही पुनः कादियां पहुँच गये और शेर की तर दहाड़ते हुए उसे चुनौती दी, परन्तु चूहा तो बिल से बाहर ही नहीं निकला। पं. जी ने अपने व्याख्यानों से अहम दिया मत का ऐसा तर्कपूर्ण खण्डन किया कि विष्णु दास ने केवल इस्लाम मत में प्रवेश से बच गये बल्कि आर्य समाज के सदस्य भी बन गये। इस प्रकार अहमदिया मत के अनुयायियों की संख्या और आय बहुत गिर गई।

पेशावर व कादियां में आर्य समाज की स्थापना करने के पश्चात अपने पैतृक गांव कट्टा तथा पहाड़ी क्षेत्र नाहन में आर्य समाज की स्थापना कर वहां के लोगों को माँस, मदिरा के सेवन से बचाया।

आर्य गजट का सम्पादन-आपकी योग्यता व धर्म प्रेम के कारण आपको आर्य गजट का सम्पादक बना दिया गया। आपकी सम्पादकीय टिप्पणियों व लेखों के कारण इस पत्रिका की धूम पूरे भारत में मच गई। आप का स्वाध्याय इतना गहरा और व्यापक था कि बड़े-बड़े विद्वान् व इतिहास मर्मज्ञ हैरान रह जाते थे क्योंकि आप अपने व्याख्यानों और लेखों में देश-विदेश के बड़े-बड़े विद्वानों के ग्रन्थों के प्रमाणों की झड़ी लगा दिया करते थे।

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र की खोज ने उन्हें आर्य मुसाफिर बना दिया- महर्षि दयानन्द जी को देह त्यागे साढ़े चार वर्ष व्यतीत हो चुके थे परन्तु किसी ने भी उनका जीवन चरित्र लिखने का प्रयास नहीं किया। आर्य समाज मुलतान ने अपने अधिवेशन में 12 अप्रैल 1888 को यह प्रस्ताव पास किया कि महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर सामग्री एकत्रित करके उनका जीवन चरित्र लिखा जाए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने 1 जुलाई 1888 को यह प्रस्ताव स्वीकृत कर पं. जी को यह महान कार्य सौंप दिया। पं. जी ने भारत के भिन्न-भिन्न नगरों ग्रामों में जाकर ऋषि दयानन्द सम्बन्धी सामग्री एकत्रित करने प्रारम्भ कर दी और एक आर्य से आर्य मुसाफिर बन गये।

पं. जी ने यह गुरुतर भार सहर्ष स्वीकार इसलिए कर दिया क्योंकि वह अपने गुरु को ऐसी सार्थक श्रद्धांजलि देने के पक्षधर थे। दस वर्ष के घोर परिश्रम के पश्चात् आर्य मुसाफिर ने लगभग 3000 पृष्ठों की सामग्री एकत्रित कर ली और वहां से लाहौर पहुँच जहां उनका प्रथम साक्षात्कार स्वामी श्रद्धानन्द जी से हुआ था और दोनों की मित्रता चिरस्थाई हो गई। लाहौर से आर्य मुसाफिर जालन्धर और फिर मथुरा पहुंचे जहां ऋषि दयानन्द जी ने स्वामी विरजानन्द जी से शिक्षा पाई थी। एक मास तक मथुरा में बैठकर ऋषि दयानन्द सम्बन्धी घटनायें लिखते रहे। मथुरा से अजमेर पहुंचे जहां उनका प्रथम और अन्तिम साक्षात्कार ऋषि दयानन्द जी से हुआ था तथा जहां उनकी अन्तयेष्टि हुई थी तथा जिस स्थान पर महर्षि दयानन्द जी की उत्तराधिकारिणी संस्था परोपकारिणी सभा ऋषि उद्यान अजमेर में अपनी गतिविधियों चलाती है।

आर्य मुसाफिर की आर्य यात्रा आगे बढ़ चली- आप अजमेर से नसीराबाद पहुँचे। वहां विधवा विवाह के पक्ष में जोरदार प्रचार किया। फिर मेरठ, अलीगढ़ पहुंच कर बरौदा में आर्य समाज की स्थापना की। अलीगढ़ से पुनः जालन्धर होकर नकोदर पहुंच कर आर्य समाज की स्थापना की। फिर आप लाहौर, सहारनपुर, कानपुर से प्रयाग पहुंचे जहां पौराणिक पण्डित ऋषि दयानन्द जी द्वारा किये वेद भाष्यों के अर्थ का अनर्थ कर रहे थे। वहीं पर आर्य मुसाफिर ने पुनः वेद भाष्य का अर्थ करवा करके उसे छपवाने की व्यवस्था की। आप प्रयाग से मिर्जापुर पहुंचे। मिर्जापुर के गुण्डे अपनी गुण्डागर्दी के लिए प्रसिद्ध है। वहां पर गुण्डों के सरदार एक मौलवी जी ने आर्य मुसाफिर से मजहबी छेड़-छाड़ की, परन्तु पं. जी की निर्भीकता ने गुण्डों के सरदार के छक्के छुड़ा दिये। तत्पश्चात् आप काशी, डुमराव, बांकीपुर और पटना में प्रचार हेतु पहुंचे।

निर्भयता उनका आभूषण था- पं. जी के व्याख्यानों से मुसलमानों एवं पौरारिणकों के शहर अजमेर में धूम मच गई। आर्य मुसाफिर की पुस्तकें पढ़कर एक अब्दुल रहमान नामक मुसलमान मुहम्मदी मत छोड़कर आर्य समाज की शरण में आ गया और उसका नाम सोमदत्त रखा गया। इससे मुसलमानों में रोष उत्पन्न हो गया। पं. जी को कोई हानि व पहुंचा दे, इससे आशांकित होकर कुछ आर्य बन्धुओं ने पं.

जी. के लिए दिन-रात के लिए चार पहरेदारों की व्यवस्था की बात करने लगे। जब पं. जी को पता चला तो गरजकर बोले, ''मुझे कोई आवश्यकता नहीं, तुम लोग डरपोक हो, कोई क्या कर सकता है मेरा'' इस प्रकार पं. जी अपनी निर्भयता का परिचय दिया। जब कि आप कुछ ऐसे तथा कथित स्वयंम आर्य समाज के प्रचारक है जो चार छ: गन लेकर चलने में अपनी शान समझते हैं। जब ऋषि दयानन्द जी अपनी सुरक्षा की कभी मांग नहीं की। आचार्य बलदेव जैसे तपस्वी तथा डॉ. धर्मवीर जैसे प्रखर वक्ता ने कभी किसी सुरक्षा, सुविधा की मांग नहीं की परन्तु कुछ स्वयंभू प्रचारक क्यों अपने आप को असुरक्षित समझते हैं? लगता है कि उन्हें ईश्वर पर विश्वास कम और अपने गन मैंनो पर अधिक विश्वास है। ऐसे लोगों को आर्य कहते हुए भी हमें लज्जा आती है।

पं. लेखराम जी ने राजस्थान में कई आर्य समाजों की स्थापना की। स्वामी दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित सामग्री एकत्रित की और बूंदी पहुंचकर नित्यानन्द जी और स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी से शास्त्रार्थ करने पहुंचे तो वे दोनों शास्त्रार्थ छोड़ कर दौड़ गये। जहाजपुर में पं. जी के व्याख्यानों की धूम मच गई। वहां उपस्थित एक मुसलमान ने कटाक्ष करते हुए कहा, ऐसे तीस मार खां, तो बूंदी से क्यों भाग आये।'' निर्भय आर्य पथिक ने एकदम उत्तर दिया, ''विपक्षी शास्त्रार्थ से भाग गया और हम लौट आये। हम हिजरत करने तो नहीं आये। मुसलमान सूबेदार ने क्रोध में आकर तलवार निकालने लगा। पं. जी कहां चुप रहने वाले थे। गरज कर बोले, 'मुझे तलवार की धमकी देता है, यदि पठान का पुत्र है तो तलवार निकाल और मजा देख।'' सूबेदार भीगी बिल्ली बनकर बैठा रहा और सभा में उपस्थित किसी अन्य ने चूं तक भी न की।

बांकीपुर में किसी ने झूठी तार भिजवा दी कि पं. लेखराम जी मारे गये हैं। वहां के डा. शाह लिखते हैं, ''अपनी मृत्यु का समाचार सुनकर पण्डित जी विचलित नहीं हुए और कहने लगे, ''मन्त्री जी, मृत्यु तो एक दिन अवश्य आनी है, किन्तु सच्चे धर्म के लिए बलिदान होने के बराबर और कोई दूसरी मृत्यु नहीं।'' डर नाम का शब्द उनके जीवन के शब्दकोष में कहीं भी नहीं था।

अन्तिम समय में भी उन्होंने सहनशीलता एवं निर्भयता का परिचय देते हुए घातक के हाथ से छुरा छीन लिया और पीड़ा को सहन करते हुए मुँह से 'सी' या 'हाय' तक न की। ''ओ३म् विश्वानि देव और गायत्री मन्त्र का उच्चारण अन्तिम समय तक करते रहे। उन्होंने वेदोक्त वह अवस्था प्राप्त कर ली जिसके लिए अन्य लोग प्रार्थना करते हैं-

ओ३म् अभयं मित्राभयममित्रादभयं
ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तममयं दिवा न:
सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु॥

एक इच्छा जो पूर्ण न हो सकी-बांकीपुर आर्य समाज के मन्त्री जी ने पं. जी से कहा, ''पं. जी! आप उर्दू और फारसी के प्रकाण्ड विद्वान् हैं, आप सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद फारसी में क्यों नहीं करते?'' पं. जी ने उत्तर दिया, ''मन्त्री जी! मैं ऋषि दयानन्द जी के जीवन चरित्र के लेखक कार्य को सम्पन्न करने के पश्चात् सत्यार्थ प्रकाश का फारसी में अनुवाद भी करना चाहता हूं तथा वैदिक धर्म के प्रचार हेतु एवं इस्लाम की पोल खोलने के लिए मुख्य मुस्लिम देशों, अफगानिस्तान एशिया, अरब, मिश्र, ईरान, तर्किस्तान आदि देशों में जाना चाहता हूं, परन्तु दु:ख की बात है कि आर्य मुसाफिर की यह हार्दिक इच्छा पूरी न हो सकी और उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई।

गुरु विरजानन्द एवं स्वामी दयानन्द के जन्मस्थान की खोज- स्वामी विरजानन्द जी एवं स्वामी दयानन्द जी ने अपने तथा अपने जन्म स्थान के बारे में विशेष कुछ नहीं बताया था। ऋषि दयानन्द के जन्म स्थान एवम् वहां के शिव मन्दिर को ढूंढ़ने में उन्होंने सतत प्रयास किया और अन्तत: खोज लिया। आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर के अपने एक अद्वितीय भाषण में (18 अप्रैल 1896) ऐसी चर्चा की थी कि स्वामी विरजानन्द जी का जन्म करतारपुर जिला जालन्धर के एक गांव में हुआ था।

पं. जी ऋषि दयानन्द जी का ऐसा जीवन लिख गये कि आज का कोई भी लेखक आप द्वारा लिखित ऋषि जीवन पढ़े बिना ऋषि पर एक भी पृष्ठ नहीं लिख सकता। आज तक जितने भी ऋषि के जीवन पर ग्रन्थ लिखे गये उनका आधार आप का ही ग्रन्थ है। आपके परिश्रम का कोई लेखा जोखा नहीं कर

सकता। न जाने ऋषि जीवन की कितनी सामग्री आप अपने साथ ले गये। ऋषि जीवन पूरा ही कर रहे थे कि एक क्रूर विश्वास घाती हत्यारे ने तीखी छुरी के वार से आपकी अन्तड़ियां ही बाहर निकाल दी। लहू की धार से धरती तो लहूलुहान हुई सो प्यारे ऋषि का जीवन चरित्र भी लहू की छींटो से पवित्र हो गया।

पेशावरी संन्ध्या- एक बार वेद प्रचार हेतु शिकरम पर कहीं जा रहे थे। सायंकाल का समय था। संन्ध्या करने का समय हो गया था। शिकरम से उतरे परन्तु वहां जल न मिला तो शिकरम की छत पर चले गये। देर तक नीचे न उतरे तो देखा गया कि वह संन्ध्या कर रहे है। संन्ध्या से निवृत होकर आये तो साथियों ने कहा, ''हो गई पेशावरी संन्ध्या (पेशावरी सन्ध्या से यहां तात्पर्य बिना आचमन अंग स्पर्श आदि से जो संन्ध्या की गई है)। पं. जी. ने उस समय हृदय को छूने वाला उत्तर देते हुए कहा, आचमन करना, अंग स्पर्श करना आदि तो गौण कर्म है परन्तु संध्या करना मुख्य कार्य है। क्या मैं गौण कार्य के लिए मुख्य कार्य (सन्ध्या) को छोड़ दू? ऐसे सच्चे व पक्के ईश्वर भक्त थे पण्डित लेखराम जी।

लक्ष्मी देवी से विवाह- ऋषि दयानन्द जी के जीवन चरित्र लिखने और सारे देश में आर्य समाज का प्रचार करने हेतु आर्य मुसाफिर बन गये थे। समय का चक्र चलता रहा और पण्डित जी के जीवन के 35 वर्ष व्यतीत गये। विवाह करने के लिए समय न मिला। ऋषि दयानन्द जी द्वारा निर्धारित 25 वर्ष की सीमा से 10 वर्ष अधिक निकल गये। आप ने 36 वर्ष की आयु में एक पहाड़ी कन्या कुमारी लक्ष्मी देवी से वैदिक रीति से विवाह किया।

पण्डित जी को तीन शोक- पण्डित जी को एक वर्ष में तीन शोक हुए। पिता जी की मृत्यु हो गई। वैदिक प्रचार में इतने खो चुके थे कि अन्त्येष्टि के लिए भी घर न पहुंच सके। छोटे भाई के अन्तिम संस्कार पर भी न पहुंच सके। तीसरा शोक था अपने प्यारे पुत्र सुखदेव की मृत्यु जो सवासाल की अल्पायु में चल बसे।

बहू हो तो लक्ष्मी जैसी-विधाता ने पहले तो इकलौता पुत्र छीन लिया और फिर पति शहीद हो गये। अपने पुत्र और पति दोनों को वैदिक धर्म की सेवा में बलिदान करके लक्ष्मी देवी अपनी सास के पास रावलपिण्डी चली गई। रावल पिण्डी आर्य समाज के उत्सव पर वेद प्रचार की अपील की गई तथा व्याख्यान कर्ता ने पं. लेखराम जी के बलिदान का चित्रण इतने मार्मिक शब्दों में किया। उस समय लक्ष्मी देवी जी के पास कुछ और नहीं था। अपने सोने को बालियों कानों से उतार कर वेद प्रचार निधि में दे दी। सगे सम्बन्धियों ने बड़ी ऊंट-पटांग बातें की परन्तु सहनशीलता की मूर्ति ने सब कुछ धैर्य से सुना। आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से 8 रूपये श्रीमती लक्ष्मी देवी तथा 5 रूपये उसकी सास के लिए कुल मिलाकर 13 रूपये मासिक पेंशन निश्चित की। लक्ष्मी देवी जी ने सभा वालों से कहा ''आप माता जी के लिए 10 रूपये पेन्शन निश्चित करो, मेरे लिए 3 रूपये पर्याप्त है। ऐसी बहू कहां मिलेगी जो अपनी साल की आवश्यकताओं को अपनी आवश्यकताओं से बड़ा समझती है।

सर्व वै पूर्ण स्वाहा- सन् 1902 की बात है गुरुकुल कांगड़ी का उद्घाटन समारोह था। लक्ष्मी देवी स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुत्री वेद कुमारी को साथ लेकर गुरुकुल पहुंच गई। उनके पास केवल 3000/- रूपये थे और उसमं से 2000/- रूपये गुरुकुल को दान दे दिये। गुरुकुल के उत्सवोपरान्त जब रावलपिण्डी पहुंची तो इतनी बड़ी राशि गुरुकुल को दान देने पर घर वालों ने बड़ी फटकार लगाई। शरीर की स्थिति बिगड़ने लग गई थी तभी अपनी वसीयत बाबू अमरदास वकील को लिखवा दी जिसके अनुसार अपने आभूषण जिसकी लागत 800 रूपये थी और 400 रूपये नकद अपनी सास को दे दिया जाये। संदूक में कुछ रेशमी कपड़े और 48 रूपये नकद एक अनाथ बालिका को दे दिया जाये जिसका विवाह होने वाला था। शेष राशि लेखराम निधि को दी जाये। कुछ समय की रूगणता के पश्चात 3 जुलाई 1902 को उनके प्राण छूटने से पूर्व अपना सर्वस्व दानकर कर दिया और अन्तिम श्वास ऐसा सोचते हुए छोड़ा ''ओ३म् सर्व वै पूर्ण स्वाहा।'' मानो अन्तिम समय यह कह रही हों-

मेरा इसमें कुछ नहीं जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझ को सौंपते का लागे है मेरा।।

चलती गाड़ी से छलांग लगा दी- पण्डित लेखराम जी के गौरव पूर्ण बलिदान पर आर्यों को अभिमान है जितनी शानदार उनकी मृत्यु थी उससे कहीं अधिक शानदार उनका जीवन था। उन्हें सूचना मिली की दोराहा (चावापायल) स्टेशन का टिकल लिया और गाड़ी में सवार हो गये। जब दोराहा (चावापायल) स्टेशन निकट आने लगा तो पण्डित जी अपना सामान बांधने लगे। साथ वाले यात्रियों ने कहा कि यह गाड़ी इस स्टेशन पर नहीं रूकती। आप गलती से एक्सप्रैस गाड़ी में आ गये हैं। गाड़ी रूके न रूके परन्तु धर्म के धुनी लेखराम का निश्चय अटल था। पं. जी बड़ी सावधानी से बिस्तर छाती से लगाकर चलती गाड़ी से कूद गये। चलती गाड़ी से कूदने पर शरीर से रक्त बहने लगा, कपड़े भी फट गये परन्तु उन भाईयों से जो मुसलमान बनना चाह रहे थे, सम्पर्क किया। वे पण्डित जी को लहू से लथपथ देखकर दंग रह गये। कारण पूछा, पण्डित जी ने संक्षेप से अपनी गाड़ी से कूदने की घटना सुना दी। उन लोगों के मन में विचार आया कि जब इन्होंने हमारे लिए जान की बाजी लगा दी है तो हम क्यों अपने धर्म से गिरे। वे बहुत प्रभावित हुए। एक भी व्यक्ति धर्मच्युत नहीं हुआ।

पुत्र के रोग ग्रस्त होने की भी चिन्ता नहीं- 18 मई 1895 के दिन पण्डित जी को एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। पुत्र का जन्म सुखदेव रखा गया। अब पण्डित जी अपनी पत्नी लक्ष्मी देवी और पुत्र सुखदेव को भी वार्षिकोत्सवों में ले जाने लगे थे। मथुरा के उत्सव पर सुखदेव रोगग्रस्त हो गया। पं. जी. रोगग्रस्त पुत्र को जालन्धर छोड़कर शिमला के वार्षिकोत्सव पर चले गये तथा 26 अगस्त को जालन्धर वापिस आ गये। जालन्धर में 28 अगस्त 1896 को सवा वर्ष की आयु में उनके पुत्र का निधन हो गया। शोक में डूबी पत्नी को पं. जी घर छोड़कर दो दिन में ही पूर्ववत प्रचार में लग गये। पुत्र की मृत्यु से दो दिन पूर्व शिमला में थे। दो दिन पश्चात् पत्नी को घर पहुंचा कर वजीराबाद के वार्षिकोतसव में चले गये। ऐसा धीरज और इतना अटल ईश्वर विश्वास सबमें नहीं हो सकता परन्तु जातियों, राष्ट्रों व संस्थाओं का इतिहास ऐसी-ऐसी घटनाओं से बना करता है।

इस घटना से सम्बन्धित एक बात इतिहास केसरी प्राध्यापक श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने स्पष्ट की है-"इस सम्बन्ध में यह लिखना आवश्यक है कि पण्डित जी की मृत्यु के बारे में लिफाफे वाली एक प्रसिद्ध कविता यह भ्रम फैल गया है कि पण्डित जी के पुत्र सुखदेव के निधन के समय पण्डित जी प्रचार यात्रा पर थे। यह बात गलत है। पण्डित जी पुत्र के निधन से पूर्व व तुरन्त बाद भी प्रचार यात्रा के लिए निकल पड़े थे, परन्तु मृत्यु उनके सामने ही हुई थी। इस विषय में मैं पहले ही कई प्रमाण अपनी पुस्तकों में दे चुका है। कुछ भी हो इकलौते पुत्र की मृत्यु के तुरन्त बाद अपनी पत्नी को घर पर छोड़कर धर्म-प्रचार व जाति-रक्ष में लग गए। - **क्रमशः**

आपको रखे तरोताजा नींबू

❑ बार-बार प्यास से गला सूख जाता है या डीहाइड्रेशन हो रहा है, तो पानी में नीबू का रस व थोड़ा काला नमक मिलाकर पीड़ित व्यक्ति को पिलाएं। डीहाइड्रेशन से होने वाली पानी और लवण की कमी पूरी हो जाएगी। ❑ सीने में जलन, खट्टी डकार जैसा महसूस हो तो पानी में नींबू का रस डालकर पियें। नींबू के पाचक गुणों के कारण ये सारी तकलीफें दूर हो जाएंगी। नींबू का अचार भी भोजन के साथ प्रयोग करना लाभकारी रहता है।❑ नींबू में मौजूद एंक्टीबैक्टीरियल तत्व गले की खराब, टॉसिल आदि से निजात दिलाने में मदद करते हैं। आधा गिलास पानी में आधा नींबू का रस निचोड़कर गरारे करें। गले की खराब ठीक हो जाएगी। ❑ नींबू के रस को पानी में मिलाकर कुल्ला करने से मुंह की दुर्गन्ध, मसूड़ों की सूजन व जीभ पर निकलने वाले दानों आदि में आराम मिलता है। ❑ नींबू के प्रयोग से दांत मजबूत होते हैं, क्योंकि यह विटामिन-सी भरपूर है। ❑ नींबू में पाए जाने वाले विटामिन-सी की वजह से त्वचा खूबसूरत होती है। यदि नींबू के रस में कच्चा दूध या ग्लिसरीन मिलाकर चेहरे पर लगाया जाय तो चेहरा दमक उठता है। ❑ बालों में रूसी है तो बालों की जड़ों में नींबू का रस थोड़ी देर के लिए लगाकर छोड़ दें। फिर कुछ देर बाद सिर धो लें। शैम्पू करने के बाद थोड़े से पानी में नींबू का रस मिलाकर बालों पर लगायें। - **विभा मित्तल (साभार यज्ञ योग ज्योति)**

रामनवमी को हम कैसे मनाए?

-राजबीर आर्य, ट्रस्टी आत्म शुद्धि आश्रम

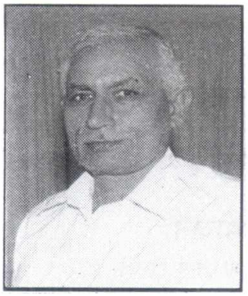

चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की नवमी वाले दिन महाराजा दशरथ के यहां रामचन्द्र का जन्म हुआ इसमें वाल्मीकि रामायण से प्रमाण देखिये।

ततो यज्ञे समाप्ते तु त्रतूनां षट्समत्युयुः। तत्श्र दादशे मासे चैत्रे नावमिके तिथौ॥ कौसल्या जनयद्रामं दिव्यलक्षणः संयुतं। लोहिताक्षं महाबाहु रकोष्ठ द्न्दुभिस्‌ नम्॥ (अर्थात् यज्ञ समाप्त होने पर जब छः ऋतु बीत चुके तब बारहवे महीने में चैत्र मास की नवमी तिथि वाले दिन माता कौसल्या से दिव्यलक्षण युक्त राम का जन्म हुआ जो अति सुन्दर व दुन्दमि के तुल्य आवाज वाला था।

हमारा बड़ा दुर्भाग्य है कि या तो हम श्री रामचन्द्र जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम जिसके अंदर एक मनुष्य के अंदर हो सकने वाले सर्वगुण पाए जाते हैं उनका अस्तित्व ही स्वीकार नहीं करते या फिर मानते हैं तो साक्षात ईश्वर मान कर उनके चरित्र को नहीं बल्कि चित्र की पूजा करने लग जाते हैं जिसमें बौद्धिक, आत्मिक, सामाजिक व शारीरिक विकास की बजाये जड़ पूजा से होने वाली पन्द्रह हानिया (सत्यार्थप्रकाश में वर्जित) होती हैं। जिस तरह से अनंत गुणों के स्वामी परमपिता परमात्मा की स्तुति हम करते हैं परिणामस्वरूप उन-उन संभव गुणों का हमारे अंदर होना और ईश्वर में प्रीति बनती है ठीक इसी तरह से श्रीरामचंद्र आदि महापुरुषों को उनके जन्मदिवस या अन्य अवसरों पर स्मरण करने से हमारे अंदर भी इस तरह की भावना व संस्कारों का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। राम के कुछ प्रमुख गुणों का वर्णन हम यहां करते हैं जिनसे हम भी उन जैसा बनने की प्रेरणा प्राप्त हो सकते हैं। जैसे जितेंनिद्रय, मधुरभाषी शत्रुओं को पराजित करने वाला, सत्यप्रतिश, प्रतापशाली, सुशिक्षित, दशस्वी, ब्रह्मज्ञानी, धर्मात्मा योगसम्पन्न मर्यादा का पालन करने वाला, स्मृतिशाली, सर्वसम्, पराक्रमकी, माता-पिता व विद्वानों का आज्ञाकारी, कृतज्ञ, प्रजापालक और युद्ध कला में प्रवीण आदि अनेक ऐसे गुण है जिनको हम धारण करके अपने जीवन को और उत्तम बना सकते हैं, क्योंकि महापुरुषों के इतिहास को ठीक-ठीक पढ़ने व सुनने के पीछे दो अभिप्राय है एकतो हम भी उन जैसा बने दुसरा कृतज्ञता का कि, अगर हम उनका स्मरण करेंगे तो यह हमें और हमारी आने वाली संतानों को याद रहेगा की हमारे पूर्वज ऐसे महान पुरुष थे। देखिये इसी तरह का एक श्लोक रामायण के अंदर भी आता है कि नारद जी राम नाम के गुणों का वर्णन कर रहे थे और ऋषि वाल्मीकि को उनकी जीवनी लिखने कि प्रेरणा देते हुए यह भी कहा। **इदं पवित्रं पापध्नं वेदेक्ष् समितम्। यः पाठेद्रांमचरितं सर्वपापैःप्रमुच्यते॥** (बालकाण्ड) (अर्थात् श्री रामचन्द्र का यह जीवन चरित्र परम पवित्र है, जो पुरुष इसको पढ़कर उनके समान अपने जीवन को बनावे तो वह भी पवित्र हो जाता है। अब हम लेखक के विषय पर आते हैं कि हमें जन्म दिवस मनाने चाहिए या नहीं कई मेरे भाई इसका विरोध करते हैं इस संबंध में मेरा विचार है कि हम जन्मदिवस क्यों नहीं मनाये? हाँ जन्मदिवस मनाने के विधि-विधान और प्रकार में अवश्य ही उद्देश्य सम्मिलित होना चाहिए। मोमबत्ती जलाकर, केक काट कर और फिर शराब के प्याले छलकाए जाने जैसे जन्म दिवस के हम विरूद्ध है। अगर जन्मदिवस वाले दिन हम कोई संकल्प, सिंहवलोकन या कोई उत्तम प्रतिज्ञा करते हैं। किसी विद्वान को बुलाकर वैदिक रीति से यज्ञ करवाते हैं, साथ में सत्संग भी हो जाये तो इस प्रकार के जन्मदिवसों को हम मनाने के पक्ष में हैं। रामनवमी हमारा एक धार्मिक पर्व है जो अकसर अप्रैल मास में आता है। इस दिन उपवास रखते हैं, मदिरों को सजाया जाता है, घंटे घड़ियाल बजाये जाते है, पूजा पाठ की जाती है, राम मदिरों में लम्बी-लम्बी कतारों में घंटो-घंटो खड़े होकर अंधश्रद्धा के वशीभूत होकर सामर्थ्य से भी ज्यादा खर्चा करते हैं, हमारी मनोकामनाये पूर्ण हो ऐसी प्रार्थनाएं कि जाती हैं, राम लला कि आरती उतारी जाती है आदि-आदि ढंग से भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न ढंगों से राम नवमी का पर्व मनाया जाता है। देश ही नहीं विदेशों में भी हम इस पर्व को मनाते हैं। मेरे विचार में अगर इस दिन हम संकल्प लें कि मैंने अपने भाई पर या किसी रिश्तेदार से किसी

(शेष पृष्ठ 34 पर)

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

श्रीमती सुदर्शनालता चौधरी धर्मपत्नी स्व. चौधरी चन्द्र भान जी विकासपुरी, दिल्ली 2600/-
श्री राजकरण जी आर्य बादली झज्जर, हरियाणा 2150/-
डॉ. स्नेहलता जी धर्मपत्नी श्री जगवीर जी सैक्टर-2,बहा. 2100/-
श्रीमती पुष्पा गुप्ता जी पश्चिम विहार दिल्ली 1100/-
श्री कर्मवीर जी राठी, पूर्व चेयरमैन निगम पार्षद, बहा. जिला अध्यक्ष इंडियन नेशनल लोकदल 1100/-
श्री कर्णसिंह जी अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य माजरा डबास दिल्ली द्वारा संग्रह 1100/-
श्री रविन्द्र जी आर्य सुपुत्र श्री रामधन जी आर्य सैक्टर-6, बहादुरगढ़ 1100/-
श्री कार्तिक दराल सुपुत्र श्री रमेश दराल टीकरी कलां,दि. 1100/-
श्रीमती सुनिता गुप्ता पत्नी श्री बृजभूषण जी गुप्ता गगन वि.,दि. 1100/-
श्री सिद्धांत दलाल सुपुत्र डॉ. राजवीर जी दलाल बहा. 1000/-
श्री हितेश कुमार सु. श्रीमती विमला देवी सैनिकपुरा,बहा. 700/-
पं. जय भगवान जी आर्य झज्जर हरियाणा 551/-
श्री रविन्द्र कुमार जी बामडौली बहादुरगढ़ 505/-
श्री प्रहलाद सिंह सुपुत्र श्री हजारी जी गढ़ी सांपला रोहतक,हरि. 511/-
श्रीमती विमला सिंगल वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़ 501/-
श्री मनुदेव जी वानप्रस्थी वृद्धाश्रम, बहादुरगढ़ 501/-
श्रीमती मायावती मदान धर्मपुरा बहादुरगढ़ 500/-
श्रीमती वाणी जून नेहरूपार्क, बहादुरगढ़ 500/-
श्री बलवीर सिंह जी मलिक गांधरा रोहतक, हरियाणा 500/-
श्री विक्रमादित्य जी शर्मा नई बस्ती, बहादुरगढ़ 500/-
कुमारी निधि ढुल सुपुत्री श्री राजवीर सिंह जी ढुल,बहा. 500/-
श्री धर्मवीर सिंह जी जून गुरुनानक कॉलोनी, बहा. 500/-
रामदास जागीड़, धनौरा टीकरी बागपत, उत्तर प्रदेश 500/-
श्री शशि भुषण जी गर्ग पश्चिम विहार, दिल्ली 500/-
श्री सत्यपाल वत्स आर्य काठमण्डी बहादुरगढ़ 500/-
श्रीमती वेद कौर देवी जी छावला दिल्ली 500/-
श्री राजबीर जी आर्य धर्मविहार बहादुरगढ़ 500/-
श्री शील चन्द्र जी बहादुगढ़ 500/-

विशिष्ट भोजन

श्रीमती आशादेवी धर्मपत्नी श्रद्धानन्द जी शर्मा दिल्ली 1 समय विशिष्ट भोजन
श्री मोनू जी सुपुत्र श्री जयभगवान जी जून गुरुनानक कॉलोनी, बहा. 1 समय विशिष्ट भोजन
श्री रवि कुमार जी आर्य, अञ्जनि प्रोपर्टीज, सैक्टर-6, बहादुरगढ़ 1 समय विशिष्ट भोजन
श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह सहरावत सैक्टर-6, बहादुरगढ़ 1 समय विशिष्ट भोजन
श्री अनिल जी गर्ग, बहादुरगढ़ 1 समय विशिष्ट भोजन

विविध वस्तुएं

माता भीमेश्वरी देवी मन्दिर बेरी झज्जर, हरियाणा 8 टीन घृत
मै. पुरी ऑयल मिलस् बहादुरगढ़ 1 टीन रिफायण्ड तेल
श्री दीपेन्द्र जी डबास शनि मन्दिर टीकरी कलां दि. 1 टीन सरसो तेल

गौशाला हेतु प्राप्त

श्रीमती निर्मला देवी नेहरू पार्क, बहादुरगढ़ 500/-
श्री दिनेश चावला जी शिवाजी नगर, गुरुग्राम हरियाणा 500/-

(पृष्ठ 33 का शेष)

रामनवमी को हम कैसे मनाए?

तरह का सम्पति आदि का विवाद है वह मैं वापस लेकर शौर्य की मिसाल कायम करूंगा, मैं झूठ बोलने की अपनी आदत को छोड़ दूंगा, माता-पिता की आज्ञा का पालन करूंगा और उनकी सेवा करूंगा, किसी दूसरे की बहन बेटी को अपनी ही बहन बेटी के समान समझूंगा, मैं राम की तरह नित्य प्रति संध्या यज्ञ करूंगा, किसी के साथ व्यवहार में धोखा नहीं करूंगा संकट के समय में भी धैर्य रखूंगा,वेद का पाठ करूंगा तथा किसी के साथ अभद्र व्यवहार नहीं करूंगा तो हमें रामनवमी, जन्माष्टमी व महाशिवरात्रि आदि धार्मिक पर्व मनाने के लाभ हैं नहीं तो यह एक लकीर पिटने वाली ही बात होगी और इसके वास्तविक लाभ से हम वंचित हो जायेंगे। अंत में इस लेख के पाठकों व अन्य देशवासियों को रामनवमी पर्व की शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 अप्रैल 2017 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

7 दिवसीय ध्यान योग शिविर एवं अथर्ववेद बृहद् यज्ञ की झलकियां

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक

अप्रैल 2017

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2015-17

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम

बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

7 दिवसीय ध्यान योग शिविर एवं अथर्ववेद बृहद् यज्ञ की झलकियां